Irish

आकृति

हिंदी पाठमाला

Help-Kit 6-8

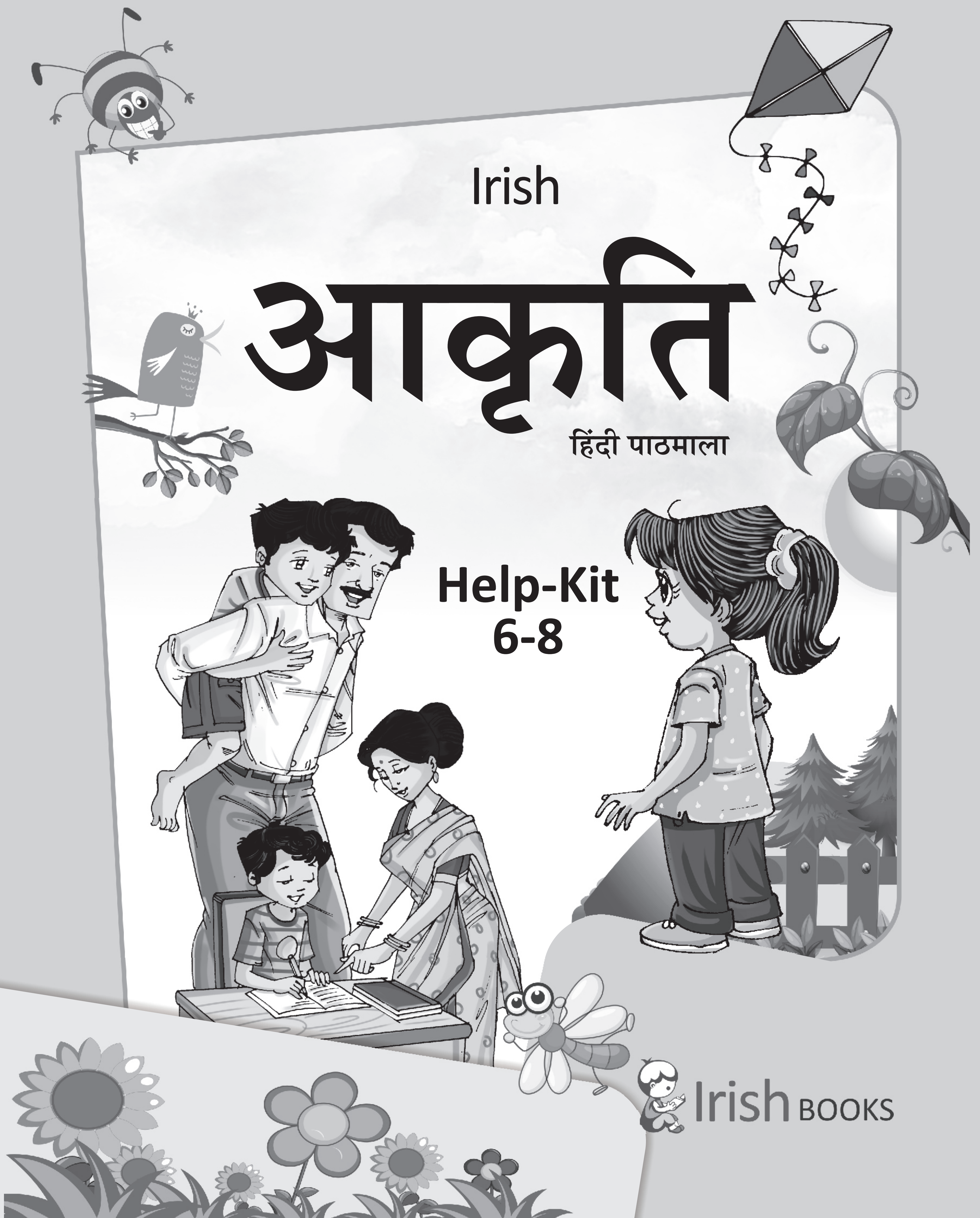

Irish BOOKS

पाठ-1 आया बसंत

1. (क) बसंत का स्वागत करने के लिए वृक्षों पर नई कोपलें फूटने लगीं।
   (ख) कोयल पंचम सुर में गा रही है।
   (ग) खेतों में पीली-पीली सरसों के पकने के कारण खेत बसंती रंग का हो गया है।
2. (क) ii; (ख) iii; (ग) i; (घ) iii
3. घड़े, सुराही **बिकने** आते
   सौंधा **ठंडा** पानी लाते
   पतली **ककड़ी** हरा पुदीना
   दही **मठा** अब खाना पीना
   शाम खुले में **अच्छा** लगता
   हँसना खिलकर खूब **महकना**
4. कोयल पंचम — कह जाती
   मीठा मंगल — सुर में गाती
   कूक-कूककर — गान सुनाती
   सबके कानों में — डाली-डाली
5. (क) बसंत ऋतु के आने पर सूरज दिनभर चमकने लगा, तेज हवाएँ चलने लगीं, पेड़ों के पत्ते पीले पड़ने लगे, पत्ते झड़ने लगे, पेड़ों पर नई कोपलें फूटने लगीं।
   (ख) कोयल पंचम सुर में मंगल गान गा रही है।
   (ग) खेतों में सरसों पक गई, जिसके कारण सरसों के पीले-पीले फूल चमक रहे हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि हवा के चलने से खेतो में पीला रंग लहरा रहा है।
   (घ) फागुन माह में न तो अधिक ठंड होती है, और न ही अधिक गर्मी होती है। प्रत्येक व्यक्ति का मन फुर्ती से भर जाता है।
   (ङ) बसंत की सुहावनी ऋतु के बाद गर्मी का मौसम आने पर जीना मुश्किल हो जाएगा। इसीलिए कवि ने कहा कि ये सुख थोड़े दिन के हैं।
   (च) परीक्षा के बाद मौज-मस्ती के दिन आएँगे।
6. (क) पुष्प, सुमन, प्रसून; (ख) सवेरा, भोर, प्रातः; (ग) कोकिल, पंचमा, पिंकी; (घ) संध्या, सायंकाल, साँझ; (ङ) शरीर, देह, काया
7. (क) दमकने; (ख) जाते; (ग) जाती; (घ) रीना; (ङ) माली; (च) बढ़ाई
8. (क) मैंने लाल रंग की फ्राक पहनी हुई है।
   राम लाल का बेटा बहुत मेहनती है।
   (ख) मैं घर से जल्द चली गई लेकिन स्कूल देर से पहुँची।
   चिड़िया के पंख बहुत, सुंदर होते हैं।
   (ग) पेड़ की डाल बहुत नीची है।
   हमें यहाँ-वहाँ कूड़ा नहीं डालना चाहिए।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 वो शख्स

1. (क) सभी रविवार की सुबह पुष्प विहार के चर्च वाले पार्क में पहुँच गए।
   (ख) बैंच पर बैठा आदमी लेखक को घूर रहा था।
   (ग) नैनसी सोई हुई थी।
2. (क) ii; (ख) iv; (ग) i; (घ) i
3. (क) सही; (ख) गलत; (ग) गलत; (घ) सही; (ङ) गलत
4. आँखें — टाप
   बाल — मोती
   सरफराज — टकटकी
   रस्सा — घुँघराले
   कुत्ता — चुलबुला
5. (क) बैंच पर बैठे व्यक्ति की लाल-लाल आँखें, उसका गुस्सा दिखा रही थीं। उसका गोरा रंग भी उसके गुस्से को उभार रहा था।
   (ख) पेड़ के ऊपर रंग-बिरंगी चिड़ियाँ, पार्क की सीमा पर लगी हुई झाड़ियों के फूल, बेशक उन फूलों में खुशबू नहीं थी लेकिन वे अपनी खूबसूरती से किसी के भी मुरझाए हुए मन को खिला सकते थे।
   (ग) भाई ने अपनी उँगली को मुँह पर रखते हुए चुप होने का इशारा किया। मुझे लगा, अरे! अब क्या हुआ, तो मैंने भी अपने दाहिने हाथ को घुमाकर पूछा क्या हुआ? तभी प्रिया दी ने उँगली का इशारा मेरे बराबर में किया। जब मैंने गर्दन घुमाकर देखा तो नैनसी सोई हुई थी।
   (घ) सरफराज़ थोड़ा आगे आया और नैनसी के कानों में तेजी से कुकड़ू-कूँ कहकर चिल्लाया। नैनसी फर्राटे से उठी।
   (ङ) आँख-मिचौली का खेल इसलिए नहीं खेला गया क्योंकि सब लोग दूर-दूर भाग जातें हैं और कोई पकड़ में नहीं आता हैं।
   (च) लड़के रस्सा टाप नहीं खेलना चाहते थे क्योंकि उन्हें डर था कि रस्सा टाप खेलने से उन्हें चोट लग सकती है और उनके पास पट्टी कराने के भी पैसे नहीं हैं।
   (छ) कुत्ते का वो इंसानी नाम सुनकर सभी खुद को रोक नहीं पाए और पेट पकड़कर हँसने लगे।
6. ऑर्डर कॉफी टॉफी टॉमी
7. (क) घबरा + आहट = आशु की घबराहट देखकर सभी हैरान थे।
   (ख) सरसरा + **आहट** = कमरे से आ रही सरसराहट सुनकर बच्चे डर गए।
   (ग) **गरम** + **आहट** = हीटर के कारण कमरे में गरमाहट है।
   (घ) **चुलबुल** + **आहट** = परम की चुलबुलाहट से सब हँसने लगे।
8. (क) बिरंगी; (ख) बितर; (ग) झगड़ते; (घ) वहाँ; (ङ) पैर; (च) मिचौली
9. (क) कर्ज से छुटकारा पाने के लिए उसने अपना घर बेच दिया।
   (ख) वह औरत बच्चे को टकटकी लगाकर देख रही थी।
   (ग) कश्मीर प्रकृति की खूबसूरती का एक अद्‌भुत उदाहरण है।
   (घ) यश बहुत ही चुलबुला लड़का है।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 मुर्गे की बाँग

1. (क) मुर्गे का नाम खूँ था क्योंकि वह कुक्कड़ू-कूँ की जगह करता था कुक्कड़ू-खूँ।
   (ख) हाँ, खूँ चतुर था।

(ग) खूँ पेड़ की सबसे ऊँची डाली से गिरा।

(घ) नहीं, लोमड़ी ने खूँ को नहीं पकड़ा।

(ङ) मुर्गा रोज सुबह कुक्कड़ू-कूँ बोलता है।

2. (क) i; (ख) iii; (ग) ii
3. (क) खूँ; (ख) जानवर; (ग) फूल, आँखें; (घ) सोते; (ङ) लोमड़ी
4. स्वयं कीजिए।
5. (क) सही; (ख) सही; (ग) गलत; (घ) सही; (ङ) गलत
6. (क) खूँ देखने में बहुत सुंदर था, बहुत बड़ा-बड़ा सा, एकदम सफेद रंग का। उसकी सुंदर-सी लाल रंग की चोंच थी और सिर के ऊपर लहराती हुई कलगी।

   (ख) एक लोमड़ी बहुत दिनों से उसे पकड़कर खाने की ताक में थी। लेकिन हर बार खूँ उससे बच निकलता था। इसलिए खूँ अपने आपको बहुत ज़्यादा चतुर समझने लगा था।

   (ग) एक दिन खूँ पेड़ की सबसे ऊँची वाली डाल पर बैठने ही वाला था कि अचानक...ज़ोर से हवा का एक झोंका आया और वह ऊपर से गिर पड़ा। उसे देखकर सभी जानवर हँसने लगे। खूँ को गुस्सा आ गया।

   (घ) अगले दिन तड़के ही मुर्गा उठ गया। इतनी सुबह थी कि अभी सूरज तक नहीं जागा था। खूँ ने अपने पंख से अपनी आँखें मलीं, ज़ोर से अँगड़ाई ली। फिर वह अपनी गर्दन लंबी करके ज़ोर से कुक्कड़ू-खूँ चिल्लाने ही वाला था कि रुक गया। उसने कुक्कड़ू-खूँ नहीं किया। उसे याद आ गया कि कैसे कल सब जानवर उस पर हँस रहे थे। खूँ ने सोचा-अब देखना। अब पता चलेगा इनको, मेरे ऊपर हँसने का क्या मतलब होता है।

   (ङ) मुर्गा पेड़ से उतर आया और चने खाने लगा। उसने खूब चने खाए। खाता गया, खाता गया, खाता गया। इतना खाया, इतना खाया कि वह फूलकर एकदम गेंद की तरह गोल-मटोल कुप्पा हो गया। उसने एक बड़ी-सी डकार ली और धप्प से बैठ गया। अब उससे चलते ही नहीं बनता था।

   (च) मुर्गे को कुछ याद आ गया। वह ज़ोर से चिल्लाया, कुक्कड़ू-कूँ। यह सुनते ही सभी जानवर जाग उठे। उन्होंने देखा कि लोमड़ी मुर्गे पर झपटने वाली है। कुत्ता तेज़ी से दौड़ता हुआ आया और ज़ोर से लोमड़ी की पूँछ काट खाई। बकरी दौड़ती हुई आई और लोमड़ी को ज़ोर से सींग मार दिए। घोड़ा दौड़ता हुआ आया और लोमड़ी को इतनी ज़ोर से दुलत्ती मारी कि लोमड़ी गुलाटी खाती हुई हवा में उछल पड़ी। ज़मीन पर वापस गिरने के बाद वह वहाँ से जो भागी कि अभी तक नहीं दिखी।

   - व्यक्तिवाचक राम मेरठ गीता
   - जातिवाचक नदी शहर वाहन
   - भाववाचक खुशी सुंदरता बचपन
7. (क) दिवस, वार, दिवा; (ख) कम, क्षीण, अल्प; (ग) पर्वत, भूधर, गिरि; (घ) विपट, वृक्ष, तरु; (ङ) सूर्य, भानु, दिनकर
8. (क) सुबह कुक्कड़ू-कूँ की आवाज सुनकर मेरी आँखें खुलीं।

   (ख) रमा की बेटी बहुत ही सुंदर-सी है।

   (ग) हवा का झोंका बहुत ही तेज था।

   (घ) जरा-सी बात पर वह फूलकर कुप्पा हो गई।

   (ङ) गोल-मटोल बच्चा बहुत ही सुंदर लग रहा था।
9. मुर्गा → कुक्कड़ू-कूँ; घोड़ा → हिनहिनाना; कुत्ता → भौं-भौं; बकरी → मिमियाना; बिल्ली → म्याऊँ-म्याऊँ; गाय → रँभाना

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 बिनिया

1. (क) बिनिया कपड़े बदलकर सीधा बगीचे में गई।

   (ख) अम्मा खाना लेकर बगीचे में पहुँचीं।

   (ग) माँ को बिनिया की चुप्पी अखर रही थी।
2. (क) ii; (ख) iv; (ग) ii; (घ) i
3. (क) माँ ने बिनिया से; (ख) बिनिया ने माँ से; (ग) बिनिया ने सिया और आमिर से; (घ) आमिर ने बिनिया से
4. (क) गलत; (ख) सही; (ग) सही; (घ) सही; (ङ) गलत
5. (क) बिनिया चुपचाप बैठी थी सबको देखती। ऐसे देखती जैसे पहली बार देख रही हो। ऐसे सुनती जैसे पहली बार सुन रही हो।

   (ख) हमेशा बोलने वाली बिनिया की चुप्पी माँ को अखर रही थी।

   (ग) खाने की चीजों का पता मकौड़े सूँघकर लगाते हैं। सूँघने से पता चल जाता है कि खाना कहाँ है और वे झट वहाँ पहुँच जाते हैं और औरों को भी इसकी खबर कर देते हैं।

   (घ) सिया बिनिया को अपने स्कूल के बारे में बता रही थी। अपनी किताबों के बारे में। अपने दोस्तों के बारे में। टीचरों के बारे में। अपने भाई-बहनों के बारे में।

   (ङ) बिल्ली को शेर की मौसी कहते हैं।
6. (क) से; (ख) से; (ग) की; (घ) को; (ङ) से
7. (क) दुग्ध, क्षीर, पय; (ख) कुसुम, सुमन, पुष्प; (ग) सिंह, वनराज, केसरी; (घ) चक्षु, नयन, नेत्र; (ङ) काक, कौवा, वायस
8. (क) काँव; (ख) अंदर; (ग) सूँघने; (घ) रंग; (ङ) काँपती; (च) कहीं; (छ) इंतजार; (ज) सूँघकर
9. (क) क्षत्रिय, त्रिभुज; (ख) श्रमिक, श्रम; (ग) व्यय, द्रव्य; (घ) वक्त, मुक्त
10. (क) प्रणाम; (ख) आदर्श; (ग) पूज्यनीय; (घ) पढ़ना; (ङ) आजकल; (च) आवश्यकता; (छ) रानियाँ; (ज) पारिवारिक
11. (क) रंग, राम, रवि, राज; (ख) सर्दी, गर्मी, पूर्णिमा, चतुर्थी; (ग) प्रेम, द्रव, समुद्र, ग्रह; (घ) राष्ट्र, ड्रम, राष्ट्रपति, ट्रक
12. (क) प् + र् + आ + त् + अ + अः

    (ख) द् + ऐ + न् + इ + क् + अ

    (ग) प् + ई + प् + अ + ल् + अ

    (घ) द् + अ + र् + प् + अ + ण् + अ

    (ङ) प् + अ + र् + इ + श् + र + अ + म् + ई

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 सूरज का मामा

1. (क) सूरज का मामा आया है।
   (ख) सूरज थैले में गर्मी, आँधी और तूफान भरकर लाया है।
   (ग) पंखा हार गया है।
   (घ) गौरैया तड़प रही है।
   (ङ) बूढ़ा खाँस रहा है।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii
3. **धूल** उड़ाता... ज्वाल **उठाता**
   पेड़ गिराता, **नमी** चुराता
   भूख **मिटाता**, **प्यास** बढ़ाता
   रात छाँटता, नींद **बाँटता**
4. (क) सूरज का मामा बहुत गुस्सैला बनकर आया है। उसका कुर्ता तुड़ा-मुड़ा सा और मैला-सा है। इसकी आँखें तप रही हैं।
   (ख) अत्यधिक गर्मी के कारण सभी लोग परेशान हैं।
   (ग) नहीं, कहीं-कहीं बहुत थोड़ी-सी हरियाली देखने को मिलती है।
   (घ) अत्यधिक गर्मी के कारण लू के झोंके चल रहे हैं।
5. (क) गब्बर का तमतमाता चेहरा देखकर मैं डर गई।
   (ख) कल शाम तेज आँधी आई थी।
   (ग) गर्मी के कारण नदी-पोखरों में भी पानी कम है।
   (घ) प्राची की लापरवाही के कारण यह दुर्घटना घटी है।
6. (क) मैला; (ख) चमका; (ग) सुहाई; (घ) मैया; (ङ) वलैया; (च) नापे
7. (क) मासिक; (ख) वक्ता; (ग) पठनीय; (घ) दैनिक; (ङ) दुर्गम; (च) जिज्ञासु
8. (क) अन्य — एक पुत्र के अलावा बूढ़ी का और कोई सहारा नहीं है।
   तरफ — गाड़ियाँ सड़क के एक ओर चल रही थीं।
   (ख) सबूत — प्रत्यक्ष को परिमाण की आवश्यकता नहीं होती।
   फल — लापरवाही का परिणाम असफलता होता है।
   (ग) पुत्र — रामलाल का सुत श्याम लाल बड़ा नटखट है।
   धागा — ये वस्त्र सूत से बने हैं।
   (घ) सहारा — दीवार के साथ एक सीढ़ी अवलंब लगी हुई थी।
   तुरंत — फोन करते ही पुलिस अविलंब पहुँच गई।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 तेनाली रामन

1. (क) हमें महाराज कृष्णदेव राय विद्वानों को आश्रय देने वाले व्यक्ति लगे।
   (ख) हमें थट्टाचार्य दूसरों की सहायता करने वाले व्यक्ति लगे।
   (ग) यदि रामन विदूषक न बनता तो वह शिक्षक (ज्ञान बाँटने वाला व्यक्ति) बनता।
   (घ) रामन 'तेनाली' नामक गाँव में रहता था, इसलिए उसे तेनाली रामन कहते थे।
2. (क) iv; (ख) ii; (ग) i; (घ) i
3. स्वयं कीजिए।
4. स्वयं कीजिए।
5. (क) लोगों ने रामन से; (ख) एक विद्वान ने महाराज से; (ग) तेनाली रामन ने विद्वानों से; (घ) महाराज ने तेनाली रामन से; (ङ) तेनाली रामन ने महाराज से
6. (क) रामन बचपन से ही बहुत बुद्धिमान तथा चतुर था। शब्दों का तो वह जादूगर था। शब्दों के विचित्र अर्थ निकालकर वह लोगों को चकित कर देता था।
   (ख) उन दिनों विजय नगर के महाराज कृष्णदेव राय का बहुत बड़ा नाम था। उनके दरबार में बड़े-बड़े विद्वान रहते थे। रामन ने भी उनके दरबार में जाने का निश्चय कर लिया।
   (ग) एक विद्वान कह रहा था-"हम संसार में नाना प्रकार की वस्तुएँ देखते हैं-पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि। पर ये सब ऐसी नहीं हैं जैसी दिखाई देती हैं। हम केवल इन्हें ऐसी मान लेते हैं।"
   (घ) अचानक रामन खड़ा हो गया। उसने उस विद्वान से पूछा, "मान लीजिए, हम कोई चीज़ खाना चाहते हैं, तो केवल यह मान लेना ही काफी है कि हम वह चीज खा रहे हैं?"
   (ङ) तेनाली रामन ने कहा, "भाइयो! भोजन तैयार है। आइए, हम सब तो भोजन करने चलें पर ये महाशय यहाँ बैठे-बैठे ही मान लेंगे कि इन्होंने भोजन कर लिया है। इन्हें यहीं बैठा रहने दीजिए।"
   (च) तेनाली रामन ने हाथी के माध्यम से महाराज को राज्य के निर्धन और दुखी लोगों की दशा के बारे में बताने का प्रयास किया।
7. (क) कृष्णदेव राय विजयनगर में शासन करते थे।
   (ख) वे विद्वानों का सम्मान किया करते थे।
   (ग) उनका बहुत नाम था।
   (घ) उन्होंने रामन को विदूषक का पद दे दिया।
8. (क) क्रोधित, क्रुद्ध; (ख) बुद्धिमान, मंदबुद्धि; (ग) प्रसन्नता, प्रसन्नचित्त; (घ) चित्रकला, चित्रकार

पाठयेतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 बैसाखी की बधाइयाँ

1. (क) यह पत्र सिमरन ने, जयप्रदा को लिखा है।
   (ख) यह पत्र बैसाखी के अवसर पर लिखा गया है।
   (ग) बैसाखी के ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पक्ष हैं।
   (घ) स्वयं कीजिए।
   (ङ) जलियाँवाला बाग अमृतसर, पंजाब में है।
2. (क) i; (ख) ii; (ग) iii; (घ) iii
3. (क) 1699 ई० की बैसाखी को सिक्खों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी ने केसगढ़ साहिब, आनंदपुर में 'खालसा पंथ' की नीव रखी थी।
   (ख) 1919 ई० में इसी दिन अमृतसर में जलियाँवाला बाग की घटना घटी थी।
4. (क) नववर्ष; (ख) फसलों; (ग) गुरु गोविंद सिंह जी; (घ) सरोवरों (ङ) उधमसिंह
5. (क) पंजाब के लोग बैसाखी को नववर्ष के रूप में मनाते हैं।
   (ख) पंजाब के लोग बैसाखी को नववर्ष के रूप में मनाते हैं। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में 'उगादि' (युगादि) पर्व मनाया जाता है। महाराष्ट्र में उसी दिन 'गुड़ी पाड़वा' मनाते हैं।

(ग) इस त्योहार की उत्पत्ति मूल रूप से कृषि-जीवन और खेत-खलिहानों से जुड़ी हुई है।

(घ) 'जट्टा आई बैसाखी, कणकाँ दी मुक गई राखी' - यानी अब तक गेहूँ के खेतों की जो रातभर जागकर रखवाली की जाती थी, वह खत्म हो गई। अब खेतों से अनाज कटकर खलिहानों तक जा पहुँचा है।

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) 1919 ई० में बैसाखी के दिन अमृतसर में जलियाँवाला बाग की घटना घटी थी। इस दिन इसी बाग में बड़ी संख्या में लोग 'रोलेट एक्ट' का विरोध करने के लिए एकत्रित हुए थे। इन लोगों पर क्रूर जनरल डायर ने गोलियाँ चलवा दी थीं। इसमें हजारों निर्दोष भारतीयों को अपने प्राण गँवाने पड़े थे।

(छ) इस मौके पर मेले लगते हैं। फसलों से होने वाली आमदनी से किसान समृद्ध हो जाता है। अत: वह सपरिवार मेले में जाकर अपने शौक पूरे करता है। इन मेलों में परंपरागत खाना-पीना, भाँगड़ा-गिद्दा और बोलियों का आयोजन किया जाता है।

(ज) स्वयं कीजिए।

(झ) स्वयं कीजिए।

(ञ) इस पत्र में बैसाखी के ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक व संस्कृतिक महत्त्व का उल्लेख किया गया है।

6. (क) मंडियाँ, मंडियों; (ख) गोलों, गोले; (ग) सिपाही, सिपाहियों; (घ) नदियाँ, नदियों; (ङ) कुरसियाँ, कुरसियों

7. (क) अस्वस्थ; (ख) अयोग्य; (ग) अन्याय; (घ) अधर्म

8.

(क) सामाजिक	=	समाज	+	इक
(ख) ऐतिहासिक	=	इतिहास	+	इक
(ग) धार्मिक	=	धर्म	+	इक
(घ) भौगोलिक	=	भूगोल	+	इक
(ङ) नैतिक	=	नीति	+	इक
(च) साहसिक	=	साहस	+	इक

9.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
पंजाब	लोग
बैसाखी	सरोवर
गुरू गोविंद सिंह जी	
खालसा पंथ	बाग
अमृतसर	

10. (क) यह सुख-समृद्धि, खुशी और मस्ती का त्योहार है।
(ख) अरे, तुम कब आए?
(ग) गुरुजी ने कहा, "कल बैसाखी है।"

11. (क) बाढ़ के कारण कई लोगों ने अपने प्राण गँवा दिए।
(ख) अपनी बेवकूफी के कारण वह दुर्घटना का शिकार बना है।
(ग) मेरी बात सुनकर मम्मी की आँखें भारी हो गईं।

12. (क) चिह्न; (ख) प्रणाम; (ग) गट्ठर; (घ) गृहीत; (ङ) हँसना; (च) खिड़की; (छ) ऋतु; (ज) प्रतिज्ञा; (झ) कृतघ्न; (ञ) मर्यादा

13. (क) रोशनी; (ख) परीक्षा; (ग) ऐतिहासिक; (घ) आशीर्वाद

14. (क) हमने अपनी बात कह दी।
(ख) लोग गाना सुनकर चले गए।
(ग) कृपा करके आने की कृपा करें।
(घ) पेड़ पर बैठे सारे कबूतर उड़ गए।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 समय

1. (क) ये घर में रहेंगे तो टाइमपीस देखते रहेंगे और बाहर होंगे तो हाथघड़ी देखते रहेंगे। इन्हें हम बर्दाश्त कर लेते हैं, इसलिए इनकी चर्चा करना व्यर्थ है।
(ख) इंतजार से प्रेम बढ़ता है। हर क्षण वही मन में रहता है और आँखें फाटक पर बिछी रहती हैं। प्रेम का ज्ञान इसी बात से तो होता है कि कौन आपका कितनी देर इंतजार करता है।
(ग) यह पूर्णतया गलत है हमें सदैव ही समय पर जाना चाहिए और ही मिलना चाहिए।

2. (क) ii; (ख) iii; (ग) ii

3. (क) भी आदमी; (ख) बतलाती; (ग) इंतजार; (घ) हँसता; (ङ) मनुष्य

4. हम एक निश्चित आयु तक ही जीवित रहते हैं। अत: हमें अपने सभी काम समय रहते ही कर लेने चाहिए। परंतु कुछ लोग अपने कार्यों को कल पर टाल देते हैं। इसलिए कहा गया है कि शायद वे अगले जन्म में मेढक की तरह कूद-कूद कर सारे कार्य जल्दी-जल्दी कर लेंगे।

5. (क) आदमी तीन प्रकार के होते हैं- समय पर घर पर न मिलने वाले, समय पर किसी के घर न जाने वाले और न ही समय पर किसी के घर पर मिलने वाले।
(ख) कुछ मुट्ठीभर जीवधारी बचते हैं, जो समय पर घर मिलते हैं और समय पर दूसरे के घर भी जाते हैं। सज्जनतावश हम इन्हें भी 'आदमी' कह देते हैं।
(ग) जो लोग समय तय करके भी घर पर नहीं मिलते हैं, वे लेखक को भगवान के एजेंट मालूम होते हैं।
(घ) लेखक अपने दोस्त से मिलने का समय तय करके उस वक्त हरगिज उनके घर नहीं जाता। यह निश्चित है कि वे घर पर नहीं होंगे। समय की पाबंदी के लिए जितनी सावधानी चाहिए, उससे कम कभी समय पर न मिलने के लिए नहीं चाहिए। वह उनके घर ऐसे वक्त जाता है, जब उनके मिलने की बिलकुल संभावना नहीं हो और वे मिल जाते हैं।
(ङ) ऐसे लोगों की निंदा भी होती है कि वे समय का कोई ध्यान नहीं रखते और अपना तथा दूसरे का वक्त खराब करते हैं पर मेरा मत दूसरा है, ऐसे लोग ज्ञानी हैं। वे जानते हैं कि काम अनंत हैं और आत्मा अमर है। जल्दी वे करें और समय का ध्यान वे रखें, जिसकी उम्र पचास-साठ वर्ष की होती है। हमारी उम्र तो करोड़ों साल है क्योंकि आत्मा कभी मरती नहीं। जो काम इस जन्म में पूरे नहीं हुए, उन्हें अगले जन्म में पूरे कर लेंगे या उसके बाद वाले जन्मों में। इस बार आत्मा ने मनुष्य का चोला लिया है। अगली बार वह मेढक का चोला भी ले सकती है। तब मेढक के रूप में हम वे काम पूरे कर लेंगे, जो आदमी के रूप में नहीं कर पाए। जल्दी क्या है?

6. (क) भगवान मृतक की आत्मा को शांति दे।
(ख) इस लड़की की घर के कामों में दिलचस्पी नहीं है।
(ग) मेहनत-मजदूरी करके वह अपने जीवन का निर्वाह कर रहा है।

(घ) हवेली का फाटक बंद करके नौकर अपने घर चला गया।

(ङ) साबुन का यह विज्ञापन ग्राहकों को लुभाता है।

7. स्वयं कीजिए।

8. (क) कर्तृवाच्य; (ख) कर्तृवाच्य; (ग) कर्मवाच्य; (घ) भाववाचक; (ङ) कर्मवाच्य

9. (क) ईय; (ख) ता; (ग) त्व; (घ) ईन; (ङ) वान; (च) आहट; (छ) दार; (ज) आई

10. (क) आदमी तीन प्रकार के होते हैं।

(ख) हम इन्हें बर्दाश्त कर लेते हैं।

(ग) फिर हम दूसरे दिन आठ बजे पहुँचते हैं।

(घ) लड़का मुँह छिपाकर हँसता है।

(ङ) अब हम सचेत हो गए।

11. (क) हम, इन्हें; (ख) वह, हमें; (ग) वही, उनका; (घ) वे, मुझे; (ङ) मैं, उसे

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 इतने ऊँचे उठो

1. (क) कवि विश्व में गतिमय परविर्तन चाहता है।

(ख) एक दृष्टि से देखने से कवि का तात्पर्य है कि हमें सभी को एक समान समझना चाहिए। किसी को भी छोटा या बड़ा नहीं मानना चाहिए।

(ग) गतिमय बनने से तात्पर्य है कि हमें सदैव कार्यरत और प्रर्यत्नशील रहना चाहिए।

(घ) मौलिक शब्द से तात्पर्य है हमें प्रकृति ने जैसा बनाया है, वैसा ही रहना चाहिए। हमें बनावट नहीं दिखानी चाहिए।

(ङ) कवि हमें मौलिकता का सृजन करने को कह रहा है।

2. (क) iii; (ख) ii; (ग) i; (घ) iii

3. (क) इतने ऊँचे **उठो कि जितना उठा गगन है**
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से,
सिंचित **करो धरा, समता की भाव वृष्टि से**
जाति भेद की, धर्म वेश की।

(ख) तोड़ो **बंधन, रुके न चिंतन**
गति, जीवन का सत्य चिरंतन।
धारा **के शाश्वत प्रवाह में**
इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है।।

4.

जाति भेद की	नूतन अक्षर दो
नई तूलिका से	रुके न चिंतन
भाषा को	उसे धरती पर लाना
तोड़ो बंधन	धर्म वेश की
अगर कहीं हो स्वर्ग	चित्रों के रंग उभारो

5. (क) नए समाज के निर्माण में हमें आगे बढ़कर अपनी कलाओं को आकार देकर उन्हें वास्तविक जीवन में लाने का प्रयत्न करना चाहिए। हमें अपने समाज को नया रूप देने के लिए सृजनात्मक बनना चाहिए। और सृजन को हमें अपने अंदर मौलिक रूप से ग्रहण करना होगा।

(ख) यदि हम धरती को स्वर्ग की तरह सुंदर बनाना चाहते हैं तो हमें अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप देने के लिए अपनी अच्छाइयों को आगे बढ़ाना चाहिए और सभी बुराइयों को दूर करके एक सुंदर समाज की रचना करना चाहिए।

6. (क) कवि चाहता है कि हमें सामाजिक बुराइयों को दूर करके एक ऐसे नए समाज का निर्माण करना चाहिए जिसमें ऊँच-नीच का भेद न हो, सब बराबर हों।

(ख) समय में व्याप्त कुछ बुराइयाँ हमारे उत्थान के रास्ते में रुकावट डालती है। अत: हमें इन पुरानी रूढ़िवादी परंपरा को बदलना चाहिए।

(ग) यदि हमें धरती को स्वर्ग की तरह सुंदर बनाना है तो हमें अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप देना होगा। हमें अपनी अच्छाइयों को लेकर आगे बढ़ना होगा और समाज में व्याप्त बुराइयों को मिटाना होगा। तभी हमारी धरती स्वर्ग की तरह सुंदर बनेगी।

(घ) कवि कहते हैं कि हमें नए समाज निर्माण में अपनी नई सोच को जाति, धर्म, रंग-द्वेष आदि भेद-भावों को दूर करके सभी को समानता की दृष्टि से देखना होगा।

7. स्वयं कीजिए।

8. (क) नीरज, पंकज, सरोज; (ख) वायु, हवा, समीर; (ग) नभ, व्योम, आसमान; (घ) सूर्य, रवि, दिनकर

9. (क) नीचा; (ख) उष्ण; (ग) गोरा; (घ) गगन; (ङ) नरक; (च) वर्तमान

10. (क) ईश्वर की दृष्टि सब पर है।

(ख) पवन बहुत ही तेज चल रही है।

(ग) हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है।

(घ) नूतन वर्ष सबको शुभ हो।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 टिंगू की क्या गलती थी?

1. (क) टिंगू ठंडा पानी ले आया और भैया के मुँह पर डाल दिया। भैया चिल्लाकर उठ बैठे। उन्होंने टिंगू को दो चाँटे जमा दिए।

(ख) टिंगू के मन में कहा, 'बस, अब पिताजी का भला करूँगा। सिगरेट पीना खराब बात है। पिताजी को सिगरेट नहीं पीने दूँगा।' उसने सिगरेट का पैकेट उठाया और नाली में फेंक दिया।

(ग) पुस्तक में लिखा है कि अच्छे लड़के बुरे आदमी की संगति नहीं करते।

2. (क) iii; (ख) iii; (ग) iii

3. (क) सही; (ख) गलत; (ग) गलत; (घ) सही; (ङ) सही

4. (क) पिताजी ने टिंगू से; (ख) बूढ़े बाबा ने टिंगू से; (ग) भैया ने टिंगू से

5. (क) टिंगू ने भैया के मुँह पर ठंडा पानी न डाला होता तो उसे दो चाँटे न पड़ते।

(ख) टिंगू ने बार-बार ''प्रणाम गुरुजी'' न कहा होता तो उसे बेंच पर खड़ा होने की सजा न मिलती।

6. (क) बेंच; (ख) कक्षा; (ग) भगवान; (घ) डॉक्टर

7. सिगरेट → पैकेट
एकलव्य → कहानी
गुरुजी → प्रणाम
वकील साहब → अहाता

8. (क) टिंगू दस-बारह बार 'प्रणाम गुरुजी' किया। इससे शिक्षक परेशान हो गए। उन्होंने समझा कि वह उनकी हँसी उड़ा रहा है। उन्हें गुस्सा आ गया। उन्होंने डाँटकर कहा, ''क्यों रे, यह तूने क्या लगा रखा है? दिनभर 'प्रणाम गुरुजी' करता है। जा, बेंच पर खड़ा हो जा।''

(ख) गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को शिक्षा देने से इनकार कर दिया था। तब उसने गुरु की मूर्ति बनाकर उसके सामने तीर चलाने का अभ्यास किया और सबसे आगे बढ़ गया।

(ग) वकील साहब के अहाते में अंगूर का पेड़ लगा था।

(घ) टिंगू को सजा मिलने पर उसकी कक्षा के लड़के उसे देखकर हँसने लगे। उसे बुरा लगा। उसका मन हुआ कि एक-एक को पीटे। फिर उसने सोचा कि क्रोध करना अच्छी बात नहीं है। इसलिए उसने लड़कों से कहा, ''मैं अच्छा लड़का हूँ, इसलिए क्रोध नहीं करता। मुझे गुस्सा आ जाएगा, तो तुम सबके मुँह तोड़ दूँगा। अभी सबको माफ़ कर रहा हूँ।'' इस पर लड़के और जोर से हँस दिए।

9. (क) रात्रि; (ख) अच्छाई; (ग) विनती; (घ) गुरु

10. (क) ललचाना, (ख) सजा देना, गलती निकालना; (ग) कामचोरी करना; (घ) दंडित करना

पाठ्येतर गविविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 प्रायश्चित्त

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) i; (ख) iii; (ग) ii; (घ) i
3. (क) बिल्ली, कमर; (ख) खिसक; (ग) खबर पास-पड़ोस, (घ) ग्यारह, बिल्ली; (ङ) पंडित जी, जमकर
4. (क) महरी ने माँजी से; (ख) महरी ने माँजी से; (ग) किसनू की माँ ने पंडित परमसुख से; (घ) पंडित परमसुख ने रामू की माँ से; (ङ) छन्नू की दादी ने माँजी से
5. (क) सही; (ख) सही; (ग) गलत; (घ) गलत; (ङ) सही
6. (क) बिल्ली के घर में उत्पात मचाने से बहू को परेशानी होती जबकि बिल्ली की हर तरफ मौज थी।

(ख) जीवन चाहे मनुष्य का हो या किसी अन्य जीव का, वह अनमोल होता है।

(ग) यदि मनुष्य भूलवंश कोई गलती कर बैठे तो वह उसका पश्चात्ताप करके सुधार कर सकता है।

(घ) अब तो आपकी हर आज्ञा का पालन करना ही होगा और आप जैसा कहेंगे, वैसा ही हम करेंगे।

7. (क) कबरी बिल्ली को अब मौका मिला, अब वह घी-दूघ पर जुट गई। रामू की बहू की जी-जान आफत में और कबरी बिल्ली के छक्के-पंजे। रामू की बहू हाँडी में घी रखते-रखते ऊँघ गई और बचा हुआ घी कबरी के पेट में।

(ख) रामू की बहू एक कटोरा दूध कमरे के दरवाजे की देहरी पर रखकर चली गई। हाथ में पाटा लेकर वह लौटी तो देखती है कि कबरी बिल्ली दूध पर जुटी हुई है। मौका हाथ में आया, सारा बल लगाकर पाटा उसने बिल्ली पर पटक दिया। कबरी न हिली न डुली, न चीखी, न चिल्लाई; बस एकदम उलट गई।

(ग) एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनाई। पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह-तरह के मेवे दूध में औटाए गए, सोने का वर्क चिपकाया गया और खीर से भरकर कटोरा कमरे में एक ऐसे ऊँचे ताख पर रखा गया जहाँ बिल्ली न पहुँच सके। रामू की बहू इसके बाद पान लगाने में लग गई।

उधर कमरे में बिल्ली आई। ताख के नीचे खड़े होकर उसने ऊपर कटोरे की ओर देखा, सूँघा, माल अच्छा है, ताख की ऊँचाई अंदाजी और देखा कि रामू की बहूत पान लगा रही है। पान लगाकर रामू की बहू सास जी को पान देने चली गई और कबरी ने छलाँग मारी। पंजा कटोरे में लगा और कटोरा झन-झनाहट की आवाज़ के साथ फर्श पर। आवाज़ रामू की बहू के कानों में पहुँची। सास के सामने पान फेंककर वह दौड़ी। क्या देखती है कि फूल का कटोरा टुकड़े-टुकड़े, खीर फर्श पर और बिल्ली डटकर खीर उड़ा रही है।

(घ) बिल्ली को मारने के लिए उसने पाटे का प्रयोग किया था।

(ङ) महरी बोली, ''अरे राम! बिल्ली तो मर गई। माँ जी, बिल्ली की हत्या बहू से हो गई, यह तो बुरा हुआ।''

मिसरानी बोली, ''माँ जी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है, हम तो रसोई न बनाऊँगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।''

सास जी बोली, ''हाँ, ठीक तो कहती हो, जब तक बहू के सिर से हत्या न उतर जाए, तब तक न कोई पानी पी सकता है, न खाना खा सकता है। बहू, यह क्या कर डाला?''

(च) पंडित जी पंडिताइन से मुसकराते हुए बोले, ''भोजन मत बनाना। लाला धारीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित्त होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा।''

(छ) ग्यारह तोले की बिल्ली बनवाने की बात तय हुई।

8. (क) अराधना, विनती; (ख) दुग्ध, क्षीर; (ग) गृह, सदन; (घ) सुमन, पुष्प; (ङ) स्वर्ण, कंचन
9. (क) आजकल मच्छरों के कारण जान आफत में है।

(ख) गर्मी के कारण खाना-पीना भी दुश्वार हो गया है।

(ग) राजन ने कमर कस ली है, वह निश्चय ही अव्वल आएगा।

(घ) आजकल दुष्ट लोगों का हौंसला काफी बढ़ गया है।

(ङ) तुमने गुंडे को जेल में डलवा दिया। अब न बाँस रहा, न बजे बाँसुरी।

10. (क) पंडित, पन्ने, अक्षर, उँगलियाँ, वथ, कृष्णा, माथा

(ख) कुछ, गंभीर, बहुत

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 मधुमक्खियों का जीवन

1. (क) अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिका डॉ० स्टुअर्टवेंट ने लंबे अनुसंधान के बाद यह पाया कि घातक रोगों के रोगाणु शहद में रखने के बाद दो से पाँच दिन के अंदर नष्ट हो गए। संभवत: इसी कारण प्राचीन काल में लोग शहद से घावों की पट्टी करते थे।

(ख) नीम के पेड़ का शहद कुछ बकबका, पर उत्तम होता है।

(ग) मधुमक्खी अपना छत्ता गुफाओं, दीवारों, घरों एवं वृक्षों आदि पर बनाती हैं।

(घ) सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान मादा रानी मक्खी का है।

2. (क) ii; (ख) iii; (ग) ii; (घ) ii
3. (क) सही; (ख) सही; (ग) सही; (घ) सही
4. (क) यदि 'शहद' के विषय में लोगों को जानकारी ही न होती तो हम इतने उत्कृष्ट खाद्य-पदार्थ से वंचित रह जाते।
   (ख) तीनों किस्म की मधुमक्खियों में 'चेन' के समान काम करने की आदत ही न होती तो वे इतनी जल्दी, इतनी मात्रा में शहद न बना पातीं।
5. (क) शहद; (ख) रक्त; (ग) पेट
6. (क) ये भारत, मलाया, श्रीलंका, म्यांमार तथा चीन आदि देशों के जंगली व पर्वतीय इलाकों में पायी जाती हैं।
   (ख) विश्व में इनकी मुख्यत: चार जातियाँ हैं।
   (ग) रानी मक्खी एक मिनट में कई व दिनभर में कई हजार अंडे देने में सक्षम होती है।
   (घ) एक किलो शहद में सवा तीन हजार कैलोरी होती हैं।
   (ङ) सरसों, तुलसी और अन्य औषधीय पेड़-पौधों से प्राप्त शहद भी श्रेष्ठ होता है।
7. (क) पुष्प, सुमन; (ख) पीयुष, सुधा; (ग) विश्व, दुनिया; (घ) खून, लहू
8. (क) दुग्ध; (ख) दधि; (ग) निम्ब; (घ) कीट
9. (क) मक्खियाँ; (ख) गुफाएँ; (ग) पतंगे; (घ) वृक्ष
10. (क) जातिवाचक संज्ञा; (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा; (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा; (घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा; (ङ) व्यक्तिवाचक संज्ञा
11. (क) मान, बल-भाववाचक संज्ञा; (ख) शेर-जातिवाचक संज्ञा; (ग) शान-भाववाचक संज्ञा; (घ) स्टेशन, स्त्री-पुरुष-जातिवाचक संज्ञा

पाठ्येतरी गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 जलाओ दीये

1. (क) अंधकार को मिटाने व खुशियाँ मनाने के लिए हम दीये जलाते हैं।
   (ख) नहीं, युद्ध करना अच्छी बात नहीं है क्योंकि युद्ध विनाशक होता है।
   (ग) इस कविता के रचयिता हैं- गोपालदास 'नीरज'।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) ii; (घ) i
3. (क) इन पंक्तियों से कवि का आशय है कि हमें अपने अंदर ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अज्ञानता के अँधेरे को दूर भगाना चाहिए तभी संसार प्रकाशित होगा।
   (ख) कवि कहना चाहते हैं कि मुक्ति अर्थात् हमारा जीवन तभी सफल होगा जब संसार में ज्ञान का सूरज चमकेगा और अंधकार रूपी रात्रि हमारे जीवन में अँधेरा न कर पाएगी।
4. (क) प्रस्तुत कविता दीपावली के त्योहार से संबंधित है।
   (ख) कवि इस कविता में मुक्ति-द्वार की जो बात कर रहे हैं, उससे तात्पर्य है-अज्ञान से छुटकारा।
   (ग) कवि अपने अंदर ज्ञान के दीये जलाने का संदेश दे रहे हैं।
   (घ) मनुष्यता तभी पूर्ण होगी जब प्रत्येक मनुष्य के अंदर सदाचार, ईमानदारी व कर्मठता के गुण जाग्रत होंगे।
   (ङ) हाँ, सिर्फ दीपक की रोशनी से अँधेरा दूर हो सकता है क्योंकि अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, एक अकेला दीपक उसे समाप्त कर देता है।
   (च) कवि कहना चाहते हैं कि अंधकार अर्थात् अज्ञान को समाप्त करने के लिए हमें ज्ञान के दीपक को अपने अंदर जाग्रत करके अज्ञानता को नष्ट करना होगा।
   (छ) इस कविता के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि दीपावली का त्योहार हमें यह संदेश देता है कि असली दीपावली तब मनेगी जब संपूर्ण संसार के लोगों के हृदय अंदर से जगमग हो जाएँगे। यह तभी संभव होगा जब मानव के अंदर सदाचार, ईमानदारी व कर्मठता का दीप जल उठेगा।
5. (क) दीपक; (ख) अंधकार; (ग) मृदा; (घ) आकाश; (ङ) सर्व, समग्र; (च) विनाश; (छ) मनुष्यता; (ज) संसार
6. (क) उजाला; (ख) पुरानी; (ग) बंधन; (घ) पूरा
7. (क) ईश्वरीय; (ख) मनुष्यता; (ग) हिम्मतवाला; (घ) धरातलीय; (ङ) परिश्रमी; (च) शांतिप्रिय

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 लोकगीत

1. (क) जगनिक चंदेल राजाओं का राजकवि था।
   (ख) जगनिक ने आल्हा-अदल की वीरता का बखान किया था।
   (ग) बरसात की ऋतु में कजरी गाई जाती है।
2. (क) iii; (ख) i; (ग) i
3. (क) देश के गाँवों; (ख) ताज़गी, लोकप्रियता, शास्त्रीय; (ग) कल्पना, रोज़मर्रा; (घ) बिदोसिया, लोकप्रिय; (ङ) बिरहा
4. (क) वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में हैं। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्ज़ापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूर्वी और बिहार के पश्चिमी ज़िलों में गाए जाते हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।
   इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोज़मर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं।
   (ख) त्योहारों पर, नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं।
   (ग) स्वयं कीजिए।
   (घ) मैथिली-कोकिल विद्यापति एक महान कवि हैं। पूरब की बोलियों में अधिकतर उनके गीत गाए जाते हैं। पर सारे देश के समस्त भागों में अपने-अपने क्षेत्र के महान कवि हैं जो क्षेत्रीय लोकगीतों की रचना करते हैं।
   (ङ) एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब प्रकाशित भी हो गए हैं।

5. (क) गुनगुन कल्पना में खोई रहती हैं।
(ख) प्रतिदिन भजन सुनना दादी जी को आनंददायक लगता है।
(ग) आकाश अनंत तक फैला हुआ है।
(घ) नरेंद्र मोदी एक बहुत ही लोकप्रिय नेता हैं।
(ङ) राधिका पुराने डाक टिकटों का संग्रह करती है।
(च) श्रवण कुमार संस्कारवान पुत्र का प्रतीक है।

6. (क) बाँसुरी; (ख) ओरॉव ; (ग) संग्रह; (घ) सारंग; (ङ) संबंध; (च) संसार; (छ) झाँझ; (ज) गाँव

7. (क) शास्त्र + ईय; (ख) रचना + इयता ; (ग) अधिक + तर; (घ) सफल + ता; (ङ) प्रकाश + इत; (च) उल्लास + इत; (छ) वास्तव + इक; (ज) दल + ईय

8. (क) नारी; (ख) पर्वत; (ग) नरेश; (घ) वन

9. (क) बासी; (ख) अलोकप्रिय; (ग) अपेक्षा; (घ) सवाल; (ङ) काल्पनिक; (च) असफलता; (छ) अंत; (ज) नवीन

10. (क) पुरुष; (ख) प्रेमिका; (ग) रानी; (घ) कवयित्री; (ङ) नर्तकी; (च) गायिका

11. (क) लोकप्रिय; (ख) बाँसुरी; (ग) शास्त्रीय; (घ) संग्रह; (ङ) प्रकाशित; (च) राजस्थानी; (छ) ऋतु; (ज) गुजरात

12. (क) मन: + ताप; (ख) राज + ऋषि; (ग) हरि + ईश; (घ) कवि + इंद्र; (ङ) सम् + कल्प

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 हर जीव का मोल

1. (क) स्वयं कीजिए।
(ख) राजा ने सोचा-'क्यों न जंगली मक्खियों और मकड़ियों को खत्म कर दिया जाए।'
(ग) स्वयं कीजिए।

2. (क) iii; (ख) i; (ग) ii; (घ) i

3. (क) खोज; (ख) आक्रमण; (ग) हार; (घ) मक्खी; (ङ) गुफा, जाला

4. आज्ञा दी गई कि → जीव-जंतुओं की खोज करो।
जंगली मक्खी और मकड़ी → बिल्कुल बेकार हैं।
शक्तिशाली राजा ने → आक्रमण कर दिया।
राजा को राजपाट छोड़ → जंगल में जाना पड़ा।
भगवान की बनाई दुनिया में → हर जीव का मोल है।
शत्रु के सैनिक → आगे निकल गए।

5. (क) राजा ने आज्ञा दी कि संसार में इस बात की खोज की जाए कि कौन-से जीव-जंतुओं का उपयोग नहीं है।
(ख) बहुत खोजबीन करने के बाद उन्हें जानकारी मिली कि संसार में दो जीव 'जंगली मक्खी' और 'मकड़ी' बिल्कुल बेकार हैं।
राजा ने सोचा-'क्यों न जंगली मक्खियों और मकड़ियों को खत्म कर दिया जाए।'
(ग) युद्ध में राजा की हार हुई और जान बचाने के लिए उन्हें राजपाट छोड़कर जंगल में जाना पड़ा।
(घ) काफी दौड़-भाग के बाद राजा ने अपनी जान बचाई और थककर एक पेड़ के नीचे सो गए। तभी एक जंगली मक्खी ने उनकी नाक पर डंक मारा जिससे राजा की नींद खुल गई।
(ङ) राजा के गुफा में जाने के बाद मकड़ियों ने गुफा के द्वार पर जाला बुन दिया।
(च) राजा की समझ में यह बात आई कि संसार में कोई भी प्राणी या चीज़ बेकार नहीं।
(छ) भगवान की बनाई दुनिया में हर जीव का मोल है, कब कहाँ किसकी जरूरत पड़ जाए।

6. (क) आदेश, निर्देश, अनुदेश; (ख) अन्वेषण, जाँच, अनुसंधान; (ग) धावा, प्रहार, आघात; (घ) वैरी, अरि, दुश्मन; (ङ) नरेश, नृप, महिपाल; (च) वन, अरण्य, कानन

7. स्वयं कीजिए।

8. (क) कौन; (ख) सुंदर; (ग) प्रसिद्ध; (घ) अकेली; (ङ) थोड़ा-सा; (च) मीठे

9. (क) शायद कल मेघना आई थी।
(ख) उसने कहानी सुनाई थी।
(ग) चाचीजी ने खाना बनाया था।
(घ) आदी क्रिकेट खेलता था।
(ङ) बालक पढ़ रहा था।
(च) रश्मि खेलती थी।
(छ) दादाजी सो रहे थे।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 एक किरन

1. (क) किरन के आने से प्रकाश फैल जाता है।
(ख) हाँ, हम प्रतिदिन सूर्योदय देखते हैं।
(ग) सूर्योदय के बाद चिड़ियाँ चहचहाती हैं।

2. (क) iii; (ख) i; (ग) iii; (घ) ii

3. (क) पड़ी **ओस की थी कुछ बूँदें**,
झिलमिल-झिलमिल पत्तों पर
उनमें जाकर, दिया जलाकर,
ज्यों **मुसकाई एक किरन**।

(ख) लाल-लाल **थाली-सा सूरज**,
उठकर **आया पूरब से**।
फिर सोने के तारों जैसे,
नभ में **छाई एक किरन**।

(ग) एक किरन से **बदल गया** जग,
चिड़ियाँ **गाती गीत चलीं**।
हवा, **चली, हिल उठे पेड़ सब**,
सबको **भाई एक किरन**।

4. हँसती → खिलती
किरन → हिरन
पत्ता → सत्ता
गीत → मीत
हवा → सवा
भाई → खाई

5. स्वयं कीजिए।

6. स्वयं कीजिए।

7. (क) उजाला; (ख) अपमान; (ग) रोती; (घ) खट्टी; (ङ) अनेक; (च) पश्चिम; (छ) गर्म/ऊष्ण; (ज) शाम; (झ) बासी; (ञ) मृत्यु

8.

चिर	पुराना
इत्र	वीर
शूर	खजाना
मेल	सहारा
कोष	मिलाप
अवलंब	सुगंधित द्रव

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 क्या निराश हुआ जाए?

1. (क) समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार ही भरे रहते हैं।
   (ख) झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं।
   (ग) खराब बस की सभी सवारियाँ अपने-अपने गंतव्य पर पहुँच जाएँ, इसलिए कंडक्टर दूसरी बस लेकर आया था।
   (घ) हाँ, वर्तमान समय में लोगों में धन-संग्रह की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है।
2. (क) iv; (ख) i; (ग) iii
3. (क) पत्नी; (ख) हिसाब; (ग) संग्रह; (घ) रहेगा
4. (क) यदि ऊँचे पदों पर बैठे लोग अपने कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार होते, तो हमारा देश विश्व में सबसे आगे होता।
   (ख) यदि हमारा देश विवेकानंद और रामतीर्थ जैसे संतों के सपनों का देश होता, तो भारत सबसे समृद्ध देश होता।
   (ग) यदि कंडक्टर जाकर वापस ही नहीं आता, तो सभी को रातभर कष्ट झेलने पड़ते।
5. (क) सही; (ख) सही; (ग) गलत; (घ) सही
6. (क) इन्कलाब जिंदाबाद; (ख) आराम हराम है।; (ग) करो या मरो।
7. (क) इन दिनों अशांति का माहौल बना है। ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं।
   (ख) लेखक ने टिकट बाबू को दस रुपये के बदल सौ रुपये का नोट दिया था।
   (ग) कंडक्टर पानी व दूध लेकर आया था।
   (घ) मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो उन्हें बदलना होगा। वस्तुत: आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।
8. (क) प्रतिभावान; (ख) बलवान; (ग) गर्वित; (घ) वैभवहीन
9. (क) बेईमान; (ख) गुण; (ग) सरल; (घ) अपवित्र
10. (क) मनुष्य; (ख) कृषि; (ग) सुंदर; (घ) देशभक्त
11. भीष्म के बचपन का नाम देवव्रत था। ये हस्तिनापुर के राजा- शांतनु और गंगा के पुत्र थे। ये शस्त्र-शास्त्र दोनों में निपुण थे। महाभारत के युद्ध में भीष्म कौरवों की तरफ थे।
12. (क) मोच; (ख) वैसा; (ग) पटना; (घ) दुआ
13. (क) नीता को गीता ने पत्र लिखा।
    (ख) पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे हैं।
    (ग) एक किताब का मूल्य मात्र पच्चीस रुपये है।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 पेड़ की बात

1. (क) मिट्टी के नीचे बहुत दिनों तक बीज पड़े रहे।
   (ख) अंकुर निकलने पर जो अंश माटी के भीतर प्रवेश करता है, उसका नाम जड़ है।
   (ग) मूली सर्दी के मौसम में पैदा होती है।
   (घ) हम जिस तरह भोजन करते हैं, गाछ-बिरछ भी उस तरह भोजन करते हैं।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) ii; (घ) iii
3. (क) मिट्टी, रसपान; (ख) पानी; (ग) भीतर; (घ) प्रकट, ऊर्जा; (ङ) अनाज, सब्जी; (च) संचय; (छ) अकस्मात्
4.

जड़	भी दाँत नहीं होते।
तना	जो अंश माटी के अंदर होता है।
गाछ-बिरछ के	जीवन का मूल-मंत्र है।
खुर्दबीन से	जो अंश ऊपर की ओर बढ़ता है।
प्रकाश ही	अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ देखे जाते हैं।

5. (क) उसकी पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की तरफ उठ आईं तथा जड़ घूमकर नीचे की ओर लटक गई।
   (ख) खुर्दबीन से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ स्पष्टता देखे जा सकते हैं।
   (ग) जब हम श्वास लेते हैं और उसे बाहर निकालते हैं तो एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है, उसे 'अंगारक वायु' कहते हैं।
   (घ) गाछ-बिरछ की सर्वाधिक कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए। यदि खिड़की के पास गमले में पौधे रखो, तब देखोगे कि सारी पत्तियाँ व डालियाँ अंधकार से बचकर प्रकाश की ओर बढ़ रही हैं। वन में जाने पर पता लगेगा कि तमाम गाछ-बिरछ इस होड़ में सचेष्ट हैं कि कौन जल्दी से सिर उठाकर पहले प्रकाश को झपट ले।
   (ङ) मधुमक्खी व तितली के साथ बिरछ की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं। कुछ पतंगे दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकल सकते। पक्षी उन्हें देखते ही खा जाते हैं, इसलिए रात का अँधेरा घिरने तक वे छिपे रहते हैं। शाम होते ही उन्हें बुलाने की खातिर फूल चारों तरफ सुगंध-ही-सुगंध फैला देते हैं। गाछ अपने फूलों में शहद का संचय करके रखते हैं। मधुमक्खी व तितली बड़े चाव से मधुपान करती हैं। मधुमक्खी के आगमन से बिरछ का भी उपकार होता है।
   (च) मधुमक्खियाँ एक फूल से पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।
   (छ) अंत में एक दिन अकस्मात् पेड़ टूटकर जमीन पर गिर पड़ता है। इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके बिरछ समाप्त हो जाता है।
6. (क) बरसात, बारिश, पावस; (ख) बालक, सुत, कुमार; (ग) तरु, पेड़, विपट; (घ) कलेवर, गात्र, काया

7. (क) अंदर; (ख) कमजोर; (ग) नर्म; (घ) अंधकार; (ङ) ऊपर; (च) अनेक; (छ) सीधी; (ज) देकर
8. (क) शिशु के सुकोमल अंगों की मालिश करनी चाहिए।
   (ख) तुम्हारी बात में सच्चाई का बिलकुल भी अंश नहीं है।
   (ग) तेज आँधी ने पेड़ की डालियाँ तोड़ दीं।
   (घ) सभी पदार्थ एक ही स्थान पर रखे थे।
   (ङ) आकाश में अनगिनत तारे हैं।
   (च) विषाक्त भोजन खाकर चूहा मर गया।
9. (क) हित + उपदेश; (ख) वन + औषध; (ग) लोक + एषणा; (घ) सिंधु + ऊर्मि; (ङ) रमा + ईश

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 साँस-साँस में बाँस

1. (क) असोम ने बाँस से बनाए जाल मछलियों को पकडने में मसलिए इस्तमाल होता क्योंकि यहाँ बाँस बहुतायत में होता है।
   (ख) शंकु का ऊपरी हिस्सा अंडाकार होता है तो नीचे का हिस्सा नुकीला दिखाई देता है।
   (ग) छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए इसे पानी की सतह पर रखा जाता है या फिर धीरे-धीरे चलते हुए खींचा जाता है।
2. (क) ii; (ख) iii; (ग) ii; (घ) ii
3. (क) उत्तर-पूर्वी; (ख) खूब प्रचलन; (ग) खपच्चियों; (घ) चिकना
4. (क) बूढ़े बाँस सख्त होते हैं और टूट भी तो जाते हैं।
   (ख) स्वयं कीजिए।
   (ग) बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकट्ठा करता था। शायद भोजन इकट्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो!
   (घ) यहाँ हम खासतौर पर देश के उत्तर-पूर्वी राज्य नागालैंड की बात करेंगे। नागालैंड के निवासियों में बाँस की चीज़ें बनाने का खूब प्रचलन है।
5. (क) वाणी के हाथों की कलाकारी देखकर सब चकित रह गए।
   (ख) घर से निकलते ही घनघोर बारिश होने लगी।
   (ग) पूजा ने पिछले साल बुनाई का सफर शुरू किया और आज बहुत सफल महिला है।
   (घ) रिक्शे वाला आड़ा-तिरछा चल रहा था।
   (ङ) राघव ने डलियानुमा घोंसला बनाया है।
   (च) ममता सदैव कहे मुताबिक कार्य करती है।
6. स्वयं कीजिए।
7. स्वयं कीजिए।
8. (क) बड़ी; (ख) विक्रय; (ग) अंत; (घ) बुरा; (ङ) पतन

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-20 अनोखा पुरस्कार

1. (क) स्वयं कीजिए।
   (ख) स्वयं कीजिए।
   (ग) स्वयं कीजिए।
   (घ) स्वयं कीजिए।
   (ङ) इस कहानी के लेखक का नाम राम नरेश त्रिपाठी है।
2. (क) iii; (ख) ii; (ग) i; (घ) i
3. (क) अँधेरा; (ख) दिशाएँ, आतंक; (ग) सच्चे, डर; (घ) रात, दूर; (ङ) लापरवाही; (च) पदवी, प्रसन्नता
4. (क) राजा ने अपने आप से; (ख) राजा ने वनरक्षक से; (ग) वनरक्षक ने राजा से; (घ) सरदार ने राजा से
5.

रात का	बंदूक चलाई
बढ़िया-बढ़िया	अँधेरा
वनरक्षक	प्रसन्नता का चिह्न
राजा ने	पुंडरीक
तलवार	चमकीले पकड़े

6. (क) गलत; (ख) गलत; (ग) सही; (घ) सही; (ङ) सही
7. (क) राजा जंगल से निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा है।
   (ख) मैं राजा हूँ। आश्चर्य है, अँधेरा मेरी कुछ भी परवाह नहीं करता, वह बढ़ता ही आ रहा है। मामूली आदमी की तरह मैं भी भूल-भटक सकता हूँ। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाएँ भी जो मेरा आतंक मानती थीं, इस समय सब चुप हैं। दरबार में बढ़-बढ़कर बातें करने वाली मेरी बुद्धि इस समय नहीं बता सकती कि मैं किधर जाऊँ?
   (ग) सच्चे आदमी को किसी भी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने में डर नहीं लगता।
   (घ) जेब से एक रुपया निकालकर राजा ने पुंडरीक की ओर बढ़ाकर और कहा कि यह लो इनाम और रात को मुझे अपनी झोंपड़ी में रहने दो।
   (ङ) सरदार की बात से वनरक्षक को पता लगा कि उससे महाराजा को न पहचानने की गलती हुई है। वह डर गया तथा क्षमा प्रार्थना करने लगा।
   (च) नहीं, मेरे सच्चे और बहादुर मित्र! मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमियों के सम्मान का ऋणी हूँ। उठो, राजरत्न पुंडरीक, उठो। अपनी पदवी का प्रमाण और मेरी प्रसन्नता का चिह्न यह तलवार लो। तुमने हमें जो सुख दिया है, उसके लिए एक हजार रुपये सालाना का पुरस्कार तुम्हें जीवनभर मिलता रहेगा।
8. (क) शेर जंगल का राजा है।
   (ख) अमन को अपनी सुंदरता पर बहुत अभिमान है।
   (ग) राजा सिंहासन पर बैठे हैं।
   (घ) मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है।
   (ङ) हमें बड़ों का सम्मान करना चाहिए।
9.

	विशेषण	विशेष्य
(क)	रंग-बिरंगी	तितलियाँ
(ख)	सात मीटर	फीता
(ग)	चार किलो	आम
(घ)	पाँच मीटर	कपड़ा
(ङ)	पीली	साड़ी

10. (क) उजाला; (ख) अपमान; (ग) घटना; (घ) रंक; (ङ) प्रश्न; (च) पास; (छ) घटिया; (ज) शत्रु
11. (क) मैंने; (ख) मैं; (ग) डाकू; (घ) राजा

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-1 नानी का संदूक

1. (क) संदूक धुएँ से काला हो गया था।
   (ख) संदूक पर ताला लटका रहता था।
   (ग) शीशी में गंगा जल था।
2. (क) iii; (ख) i; (ग) ii
3. आगे लटका रहता **ताला**
   सूखी **लौकी** देखी उसमें
   खाली जगहों में है **जाना**
   जगन्नाथ का भात उबाला
4.

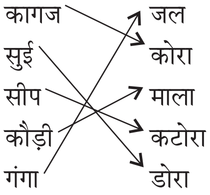

5. (क) संदूक पीछे से टूटा हुआ है।
   (ख) संदूक में चंदन की चौकी, सूखी लौकी, बाली जौ, गंगाजल, ताम्र पत्र, तुलसीदल रखा है।
   (ग) संदूक में चींटा, झींगुर, खटमल आदि कीट हैं।
6. (क) चौकियाँ; (ख) बालियाँ; (ग) लौकियाँ; (घ) जाले; (ङ) शीशियाँ; (च) चींटे; (छ) सुइयाँ; (ज) कटोरे
7. (क) माला; (ख) कल; (ग) लौकी; (घ) गोरा; (ङ) बंदूक; (च) रात; (छ) सटकर; (ज) चटमल
8. (क) पड़ोसी; (ख) बीमारी; (ग) आयु; (घ) श्रीमती; (ङ) दीवार; (च) कवयित्री; (छ) अलौकिक; (ज) डाकू

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 कर्मशील बनो

1. (क) अकर्मण्य लोग 'भाग्य' शब्द का प्रयोग करते हैं।
   (ख) संपन्न मनुष्य अपना भाग्य स्वयं बनाता है।
   (ग) प्रकृति की प्रत्येक रचना में ईश्वर विद्यमान है। इसीलिए ईश्वर को सर्वव्यापी व सर्वद्रष्टा कहा गया है।
2. (क) i; (ख) iii; (ग) ii
3. (क) रहन-सहन; (ख) भाग्य; (ग) शत्रु; (घ) कर्महीन, पा; (ङ) भाग्य
4. (क) गलत; (ख) गलत; (ग) सही; (घ) सही; (ङ) गलत
5. (क) जो लोग केवल भाग्य के भरोसे सब कुछ छोड़कर अकर्मण्य बैठ जाते हैं, वे भविष्य में कुछ नहीं कर पाते। ऐसे ही लोगों के लिए ''भाग्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।''
   (ख) यदि मनुष्य चाहे तो वह क्या नहीं कर सकता। वह अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है। इसीलिए कहा गयाहै कि ''इस दुनिया में सब कुछ है, जो कर्महीन हैं वे नहीं पाते।''
6. (क) भाग्य! इस भाग्य ने मनुष्य को जितना गुमराह कर रखा है उतना किसी और बात ने नहीं किया है।
   इस भाग्यवाद की उत्पत्ति कहाँ से हुई? इसका कुछ इतिहास नहीं है। पर इतना अवश्य है कि कुछ अकर्मण्य लोगों ने ही इसका प्रचलन किया होगा। जो कुछ कार्य नहीं करते, परिश्रम करने से घबराते हैं और जिनकी एकमात्र इच्छा यह रहती है कि उनके पास मुफ्त में सब कुछ चला आए, वही भाग्य की बात करते हैं।
   ''क्या करें यार! मेरी तकदीर ही ऐसी नहीं है।'' दूसरी को प्रगति करते देख और संपन्न पाकर वे कहते हैं, ''उसका भाग्य प्रबल है।'' यह भाग्य क्या बला है? मैं आज तक नहीं समझ पाया हूँ।
   (ख) जिसका भाग्य आप प्रबल मनाते हैं, उसके गिरेबान में अपना मुँह डालकर देखो तो? क्या वह भाग्य के बल पर ही उतना सब पा सका है?
   पूछो उससे। देखो उसकी दिनचर्या।
   रात-दिन कितना कठोर श्रम करके उसने अपने-आपको इस प्रकार बनाया है। तब आपको पता चलेगा कि मनुष्य अपना भाग्य अपने हाथों से बनाता है। जो कुछ भी उसके पास होता है, उसके कर्मों और सूझ-बूझ का फल होता है।
   (ग) लोमड़ी का किस्सा जरूर याद आता है जिसने अंगूर न पाने के कारण उसे खट्टा कहना शुरू किया था जबकि वे वास्वत में मीठे थे। उनको न पाकर उसने यह संतोष कर लिया था कि वे खट्टे हैं। इसी प्रकार भाग्यवादी मनुष्य सब कुछ पाने की क्षमता रखने के बावजूद, आलस्य के कारण या कामचोरी के कारण भाग्य की बात मानकर पड़ा रह जाता है।
   (घ) रसेल का जवाब था, ''मन को शक्ति देने वाली इस आध्यात्मिक कल्पना का नाम ईश्वर है।''
   (ङ) अपने भाग्य का आप स्वयं निर्माण करें। सब कुछ आपके हाथ में है। संकल्प करें, शक्ति लगा दें। आपको सब कुछ मिल जाएगा। आवश्यकता धैर्य की, साहस की, समय की है। जब आप ईमानदारी से इस पर पूरा-पूरा अमल करेंगे तो आप सब कुछ पा सकते हैं। मनुष्य क्या नहीं कर सकता? ईमानदारी के साथ कभी आपने इस प्रश्न पर सोचा है? देखिए, विचार कीजिए।
7. (क) उत्तर, हल, विकल्प; (ख) जल्दबाजी, घबराहट, आनन-फानन; (ग) ईश्वर, भगवान, परमेश्वर; (घ) नसीब, किस्मत, मुकद्दर
8. (क) भाग्यवान; (ख) लखपति; (ग) दैनिक; (घ) सर्वव्यापी; (ङ) मासिक; (च) सर्वदृष्टा
9. (क) बिरंगी; (ख) बितर; (ग) झगड़ते; (घ) वहाँ; (ङ) पैर; (च) नेत्रहीन
10. (क) चिड़ियाघर के मोर बहुत सुंदर हैं।
    (ख) दिल्ली जाने के लिए मैंने बस से यात्रा की।
    (ग) जज ने पुलिस के द्वारा अपराधी को पकड़वा लिया।
    (घ) मेज के नीचे बिल्ली बैठी है।
    (ङ) कार के निकट स्कूटर खड़ा है।
11.

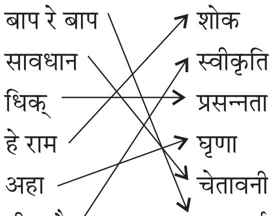

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 मेरी माँ

1. (क) स्वयं कीजिए।
   (ख) इस पाठ में रामप्रसाद बिस्मिल जी की माता जी की बात हो रही है।
   (ग) स्वयं कीजिए।
2. (क) iii; (ख) i; (ग) ii; (घ) i
3. (क) अशिक्षित, सदृश; (ख) परिश्रम, देवनागरी; (ग) उपेक्षा, उदार; (घ) प्राणदंड; (ङ) जीवन, प्रोत्साहन; (च) प्रेमभरी, सांत्वना; (छ) श्रद्धापूर्वक
4. गृह-कार्य की शिक्षा — पुस्तकों का अवलोकन करतीं
   सखी-सहेली से — जननी
   देवनागरी की — दादी जी की छोटी बहन
   जन्मदात्री — वाणी
   प्रेमभरी — अक्षर-बोध करतीं
5. (क) ग्यारह वर्ष की उम्र में माता जी विवाह कर शाहजहाँपुर आई थीं।
   (ख) शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद ही दादी जी ने अपनी छोटी बहन को गृह-कार्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए बुला लिया।
   (ग) बिस्मिल का जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने हिंदी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने का शौक उन्हें खुद ही पैदा हुआ था। मुहल्ले की सखी-सहेली जो घरपर आया करती थीं, उन्हीं में जो कोई शिक्षित थीं, माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इस प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करतीं। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वह देवगनागरी पुस्तकों का अवलोकन करने लगीं।
   (घ) बिस्मिल को माता जी का सबसे बड़ा आदेश था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना।
   (ङ) आर्य-समाज में प्रवेश करने के बाद, से बिस्मिल का माता जी से खूब वार्तालाप होता। उस समय की अपेक्षा अब उनके विचार भी कुछ उदार हो गए थे। यदि उसे ऐसी माता न मिलतीं तो वह अति साधारण मनुष्य की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने उनकी वैसी ही सहायता की है, जैसी मेजिनी की सहायता उनकी माता ने की थी।
   (च) गुरु गोविंदसिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु का संवाद सुना, तो बहुत हर्षित हुई थीं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाइयाँ बाँटी थीं।
   (छ) अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।
6. (क) अशिक्षित बिमला ने अपने पुत्र को पढ़ा-लिखाकर डॉक्टर बना दिया।
   (ख) हमारी दुकान पर ग्रामीण ग्राहक आते हैं।
   (ग) इस कार्यक्रम का सारा प्रबंध विकास ने ही किया है।
   (घ) चाचाजी से वार्तालाप करते हुए समय का पता ही नहीं चला।
   (ङ) भारतवर्ष में अनेक क्रांतिकारी जन्में हैं।
   (च) हमें अपने अध्यापकों की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
7. (क) परिश्रम; (ख) वार्तालाप; (ग) क्रांतिकारी; (घ) धृष्टतापूर्ण
8. (क) शिक्षित; (ख) मृत्यु; (ग) बड़ी; (घ) असामाजिक; (ङ) संकीर्ण; (च) दीर्घ; (छ) अपूर्ति; (ज) अंत; (झ) अमंगल; (ञ) अवनति
9. (क) वे लोग बाज़ार गए हैं।
   (ख) ये सब वस्तुएँ ले जाओ।
   (ग) लिखते-लिखते मेरे ध्यान में आया।
   (घ) इस विषय में अपना मत मैं पहले ही बता चुका हूँ।
   (ङ) बस तू ही मेरा सच्चा शिष्य है।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 कल्पनालोक का स्वर्ग : सिक्किम

1. (क) सिक्किम के निवासी अत्यंत उत्साही हैं।
   (ख) सिक्किमवासी 'बुमचू' नामक पवित्र पात्र की पूजा करते हैं।
   (ग) यहाँ लगभग 194 मठ हैं।
   (घ) कस्तूरी हिरण, रीछ, भौंकने वाला हिरण, चितकबरी बिल्लियाँ, नीली भेड़, विश्वविख्यात लाल पांडा, छोटे पशुओं में हिमालयी भटभटए, सिक्किमी मूस, उड़ने वाली गिलहरी बहुतायत में हैं।
2. (क) iii; (ख) ii; (ग) i; (घ) i
3. (क) सिक्किम; (ख) महत्त्व; (ग) पताकाएँ; (घ) प्रेमी
4. (क) सही; (ख) गलत; (ग) सही; (घ) गलत
5. (क) वैमनस्य; (ख) व्यापार; (ग) ज्येष्ठ; (घ) स्वभाव
6. (क) विश्व में सबसे ऊँची पर्वतश्रेणी हिमालय पर्वतश्रेणी है।
   (ख) सिक्किम के दक्षिण-पश्चिम में याच, बाँस, इलायची और संतरों के विशाल बाग हैं।
   (ग) सितंबर-अक्टूबर में नेपाली और हिंदू मिलकर अपने सबसे बड़े पर्व हसेन को नाच-गाकर खूब धूमधाम से मनाते हैं।
   (घ) सिक्किम में चार जिले हैं।
7. (क) शोक (ख) मंगल; (ग) कल; (घ) दुर्बल
8. (क) दृश्य, दुषिपथ; (ख) पहाड़, शैल; (ग) वर्तन, कलाकार; (घ) झंडा ध्वजा
9. (क) नरक; (ख) अन्याय; (ग) अपवित्र; (घ) विदेश

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 जागो जीवन के प्रभात!

1. स्वयं कीजिए।
2. (क) i; (ख) i
3. (क) उषा **बटोरती अरुणगात**,
   अब जागो जीवन के प्रभात।
   (ख) रजनी **की लाज समेटो तो**
   कलरव से उठकर भेंटो तो।
   (ग) अरुणाचल **में चल रही बात**
   अब जागो जीवन के प्रभात!
4. (क) कवि ने कविता के माध्यम से जीवन में नई आशा का संचार करने के लिए और जागरण करने के लिए संदेश दिया है।
   (ख) 'मयत्र-वात' का अर्थ है, प्रात:काल की मंद और शीतल सुगंध वाली समीर।

(ग) पक्षियों का 'कलरव' (चहचहाना) हमें इंगित करता है कि रात्रिकालीन साज-सज्जा (अंधकार) की कालावधि बीत गई और प्रात: पक्षियों का मधुर कलरव (गान) हो रहा है।

5. (क) पशुओं को चराना; (ख) पूजा करना; (ग) चहचहाना; (घ) ज्ञान अर्जित करना; (ङ) फूलों का रस चूसना

6. (क) भागो; (ख) निखरे; (ग) सम; (घ) दुखद

7. (क) पूरी कक्षा चार दलों में बँट गई।

(ख) आकाश में तारे चमक रहे हैं।

(ग) मेरा शिष्य होकर तुम मुझे ही आँखें दिखाते हो।

8. (क) प्रात:, अमृत बेला; (ख) धरती, भूमि; (ग) अंधकार, तिमिर; (घ) रात्रि, निशा

9. (क) दुखद; (ख) मरण; (ग) प्रकाश; (घ) संध्या/रात

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 पर्यावरण संरक्षरण है सच्चा बंधन

1. (क) रक्षाबंधन का पर्व समीप था।

(ख) माँ ने आँगन में जल से भरकर मिट्टी का कलश गोबर से सजाकर उसमें जौ बो कर रखा।

(ग) आँगन में जल से भरे मिट्टी के कलश को **गोबर से** सजाकर उसी में जौ के दाने बो दिए जाते हैं। उनसे निकले अंकुरों को **कजली** कहते हैं।

(घ) राहुल छोटे भीम की राखी बँधवाएगा।

2. (क) iii; (ख) ii; (ग) ii; (घ) ii; (ङ) iii

3. (क) गलत; (ख) सही; (ग) सही; (घ) गलत; (ङ) सही

4. (क) श्रेया ने माँ से; (ख) माँ ने श्रेया से; (ग) ज्ञानू दादा ने बच्चों से

5. (क) उत्साह; (ख) ऑक्सीजन, वायुमंडल; (ग) फल-फूल, औषधियाँ, लकड़ियाँ; (घ) प्रकृति; (ङ) बरगद, जीवित, हरा-भरा

6. (क) इन्हें वह मामाजी के कानों के पास लगाकर पारंपरिक ढंग से रक्षाबंधन का पर्व मनाएगी।

(ख) प्रत्येक भारतीय पर्व, त्योहार और पूजा-पाठ की सभी परंपराएँ किसी-न-किसी रूप में प्रकृति और पर्यावरण से ही जुड़ी हुई हैं। रक्षाबंधन का पर्व भी उनमें से एक है। यह समय वर्षा ऋतु का है। जब प्राकृतिक वातावरण एकदम धुला, साफ, हरा-भरा और प्रदूषण मुक्त होता है। ऑक्सीजन की मात्रा वायुमंडल में बढ़ जाती है। नए पेड़-पौधे उगने लगते हैं और जीव-जंतुओं के लिए भी अनुकूल वातावरण बन जाता है। इसका सर्वाधिक लाभ हमें ही मिलता है।

(ग) आज भी महिलाएँ बरगद की पूजा करके कृतज्ञता ज्ञापित करती हैं और उसे रक्षा-सूत्र बाँधकर एक-दूसरे की दीर्घायु की कामना करती है।

(घ) दरअसल, बरगद का वृक्ष हजारों वर्षों तक जीवित और हरा-भरा रह सकता है इसलिए इसे दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि पौराणिक काल में ऐसे ही एक वटवृक्ष (बरगद) की छत्रछाया में सावित्री ने यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण बचाकर लंबी आयु प्राप्त की थी।

(ङ) सभी बच्चे ज्ञानू दादा के बरामदे में जमा हुए। ज्ञानू दादा मुहल्ले के बच्चों के सवालों और समस्या के समाधान के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

(च) नहा-धोकर लक-दक कपड़ों में तैयार बच्चों ने पहले घर में रक्षाबंधन मनाया। एक-दूसरे को राखियाँ बाँधकर मिठाइयाँ खिलाईं, फिर थाल सजाकर मुहल्ले में निकल पड़े। उनके पीछे ज्ञानू दादा और अन्य लोग भी निकल पड़े। पेड़ों को राखियाँ बाँधी जाने लगीं।

7. (क) वि + चार = **विचार**; (ख) अभि + यान = **अभियान**; (ग) वि + हार = **विहार**; (घ) अभि + मान = **अभिमान**; (ङ) वि + **शेष** = **विशेष**; (च) अभि + **युक्त** = **अभियुक्त**; (छ) वि + **रोध** = **विरोध**; (ज) अभि + **षेक** = **अभिषेक**

8. (क) बाप; (ख) बेटी; (ग) बहन; (घ) दादी; (ङ) मामा; (च) पत्नी

9. (क) आज प्रत्येक भारतीय देश की समृद्धि के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है।

(ख) तुम्हें अपने भाई के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।

(ग) प्लास्टिक कचरा पर्यावरण के लिए भयंकर खतरा है।

(घ) आजकल शहरा में प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

(ङ) मेरा उद्देश्य आपको कष्ट पहुँचाना नहीं हैं।

10. (क) राहुल; (ख) इस पौधों; (ग) माँ; (घ) बच्चे; (ङ) सावित्री

11. (क) दीर्घायु; (ख) वाचनालय; (ग) भाावनात्मक; (घ) विद्यालय; (ङ) सेवार्थ; (च) यथार्थ

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 पिता का पत्र

1. (क) पिता ने पुत्री कविता को उसकी सफलता के अवसर पर पत्र लिखा।

(ख) उन्होंने जो लक्ष्य मिलकर तय किया था, पूरा हुआ। और दूसरा, मन में बरसों से जो एक अपराध-बोध पल रहा था, आज उससे मुक्ति का भी दिन था।

(ग) जब पुत्री मास्क लगाकर कैंसर के जानलेवा सैल्स इकट्ठे करने के लिए अस्पताल-अस्पताल घूमती है तो पिता को अपनी पुत्री पर गर्व होता है।

(घ) विज्ञान ने आज सिद्ध कर दिया है कि लड़की होना एक जैविक सच्चाई है।

(ङ) अपनी एक फोटो गोल्ड मेडल लेते हुए नीरू बुआ को जरूर भेजना। उन्हें बहुत अच्छा लगेगा क्योंकि अच्छें नंबर लाने पर भी उनकी पढ़ाई रोक दी गई थी क्योंकि वे एक लड़की थी।

2. (क) iv; (ख) iii; (ग) i

3. (क) अपनी बहन के संदर्भ में मैं यह तथ्य समझ नहीं पाया और मेरी योग्य बहन सिर्फ इसलिए कुछ बन नहीं पायी क्योंकि मैं उसे सिर्फ एक लड़की समझता रहा। लेकिन मैंने आगे चलकर भूल-सुधार किया और तुम्हारे लिए एक सपना देखा जो आज पूरा हो रहा है। आज तुम्हारी उम्र 28 साल की हो गई है। मैं तुम्हारी जिंदगी के सारे निर्णय तुम पर छोड़ता हूँ।

(ख) हमें दो तरह से लड़ाई लड़नी है— एक तो पुराने संस्कारों से, दूसरे इस नई उपभोक्ता संस्कृति से जो स्त्री के सम्मान को बार-बार चोट पहुँचाती है।

(ग) लड़की होना एक जैविक सच्चाई है, परंतु सामाजिक सच्चाई यह है कि छुटकी तो कभी खाली बैठती ही नहीं थी। माँ के काम में हाथ बँटाती, पिता जी के नहाने के लिए गरम पानी रखती, छत पर कपड़े सूखने डालती। यही नहीं, मैं भी पतंग उड़ाते समय चरखी पकड़ने के लिए या पतंग का माँझा बनावाने के लिए छुटकी को ही आवाज लगाता।

(घ) पत्र के आधार पर पता चलता है कि निरुपमा बुआ मेहनती, संस्कारी व पढ़ाई में होशियार थी।

(ङ) पिता अपनी बहन की योग्यता को पहचानकर भी उसका साथ नहीं दे पाया। इसीलिए उसकी योग्य बहन केवल इसलिए कुछ नहीं करपायी कि वह उसे केवल एक लड़की समझता था। परंतु दूसरी ओर अपनी पुत्री समस्त निर्णय स्वयं लेने में स्वतंत्र थी। इस प्रकार वह जीवन में आगे बढ़ सकी।

4. (क) गूँज = ग् + ऊँ + ज् + अ
   (ख) हॉल = ह् + ऑ + ल् + अ
   (ग) प्रक्रिया = प् + र् + अ + क् + र् + इ + य् + आ
   (घ) उपलब्धि = उ + प् + अ + ल् + अ + ब् + ध् + इ
   (ङ) मुक्ति = म् + उ + क् + त् + इ
5. (क) चाह, अभिलाषा; (ख) कार्यक्रम, उत्सव; (ग) अक्लमंद, तीव्रबुद्धि; (घ) दुगर्म, मुश्किल
6. (क) कथात्मक, नकारात्मक; (ख) सजावटी, बनावटी; (ग) टिकाऊ, पकाऊ; (घ) घड़घड़ाहट, बड़बड़ाहट
7. (क) तालियों, करण कारक; (ख) खुशी, संबंध कारक; (ग) उससे, अपादान कारक; (घ) तुम, अधिकरण कारक; (ङ) संस्कृति, अधिकरण कारक
8. (क) की; (ख) कि; (ग) की; (घ) की; (ङ) कि
9. (क) रीतिवाचक क्रियाविशेषण; (ख) रीतिवाचक; (ग) कालवाचक; (घ) कालवाचक, परिमाणवाचक; (ङ) कालवाचक, रीतिवाचक

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 भारत कोकिला : एक और पहलू

1. (क) राजनेता जिंदगी की सच्चाई को दिमाग की आँखों से देखता है।
   (ख) एक कवि उसी सच्चाई को भावुकता के रंग में रँग देता है।
   (ग) सरोजिनी नायडू के उत्साह और कर्मठता के फलस्वरूप 1942 में उन्हें राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया गया।
   (घ) सरोजिनी नायडू गांधी जी को 'मिकी माउस' कहकर पुकारती थीं।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii; (घ) i; (ङ) ii
3. (क) जूझना; (ख) परिकल्पना; (ग) विनोदप्रियता, आवरण; (घ) गोखले; (ङ) उतावली; (च) विद्रोहिणी
4. भावुक → हृदय
   सरोजिनी नायडू → भारत कोकिला
   हास्य की → फुलझड़ी
   भारतीय संस्था का उद्घाटन → गोखले जी
   गवर्नर → पश्चिम बंगाल
5. (क) रास्ते; (ख) कवयित्री; (ग) पूरा; (घ) ने; (ङ) बेटी
6. (क) सरोजिनी नायडू के भाषणों से छलकता काव्य-रस श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता था। उनके शब्दों में छिपा व्यंग्य-विनोद लोगों को सहज ही अपनी ओर खींच लेता था।
   (ख) अपने विनोदी स्वभाव के कारण सरोजिनी नायडू अपनी मित्र मंडली की विदूषक कही जाने लगी थीं।
   (ग) जिंदगी उनकी सहेली थी। वह जिस रूप में सामने आए, उन्हें अच्छी लगती थी। यही कारण था कि जेल में रहते हुए भी वे कभी दुःखी नहीं रहीं।
   (घ) स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद जब उन्हें पश्चिम बंगाल का गवर्नर बनाया गया तब भी वे हास्य की फुलझड़ी छोड़ने से बाज़ नहीं आईं।
   (ङ) सरोजनी पर गांधी जी के गुणों और व्यक्तित्व से कुछ ऐसी अभिभूत थीं कि उनके सामने भीगी बिल्ली बन जाती थीं।
   (च) 1913 की बात है। सरोजिनी लंदन में थीं। स्वाभाविक था कि मित्रों से मिलती-जुलती थीं। ऐसा हुआ कि सब चाय के लिए इकट्ठे हुए। सरोजिनी लंदन में हो रही घटनाएँ जानने के लिए उतावली थीं।
   (छ) गोखले जी बीमार चल रहे थे। डॉक्टरों ने उन्हें किसी भी किस्म के श्रम के लिए पूरी तरह मना किया हुआ था।
   (ज) सरोजिनी ने गोखले जी से कैक्सन हॉल में भारतीय संस्था का उद्घाटन करने के लिए लंदन चलने को कहा।
   (झ) ''मुझसे पूछे बिना...., किस अधिकार से तुम इतनी बड़ी बात कर आई हो? बोलो?'' हैरान गोखले जी ने कहा।
   सरोजिनी ऐसे ही क्षण की प्रतीक्षा में थी, ''आपसे नेतृत्व सँभालने की माँग के अधिकार से, युवा पीढ़ी तक आपका संदेश पहुँचाने के अधिकार से!'' उनकी वाणी में हीरे की-सी धार थी।
   (ञ) गोखले चकरा गए। लड़की की बात तर्कपूर्ण है, वे समझ गए। मुसकराकर बोले, ''तुम सदैव अपनी बात मनवा ही लेती हो। 'न' सुनने की तुम आदी नहीं हो।''
7. (क) निराकार; (ख) अस्पष्ट; (ग) सरल; (घ) धीमा; (ङ) असंभव; (च) दोष
8. (क) अपने जैसा बना लेना ⇒ महात्मा जी शत्रु को भी अपने रंग में रँग लेते थे।
   (ख) बहुत प्रिय ⇒ आंशिका अपनी माँ की आँखों का तारा है।
   (ग) बहुत डर जाना ⇒ रामू तो अपने मालिक के सामने भीगी बिल्ली बन जाता है।
9. (क) अध्यक्षा; (ख) बिलाव; (ग) कवयित्री; (घ) बेटा
10. (क) उनकी वाणी में हीरे की-सी धार है।
    (ख) मैंने वचन दिया था।
    (ग) यहाँ क्या हो रहा होगा?

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 मिठाईवाला

1. (क) विजय बहादुर के दो बच्चे थे- चुन्नू और मुन्नू।
   (ख) रोहिणी राय विजयबहादुर की पत्नी थी।
   (ग) मुरलीवाला दो-दो पैसे में मुरली दे रहा था।
   (घ) विजय बाबू मुरलीवाले की इस बात पर मुसकराए जब उसने कहा कि वैसे तो तीन-तीन पैसे के हिसाब से हैं, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूँगा।
2. (क) ii; (ख) iii; (ग) i; (घ) iii
3. (क) बच्चों ने खिलौनेवाले से; (ख) रोहिणी ने विजय बाबू से; (ग) विजय बाबू ने मुरलीवाले से; (घ) रोहिणी ने दादी से
4. (क) मिठाईवाले के पास पैसे की कभी नहीं थी, परंतु वह सभी बच्चों में अपने बच्चों की झलक पाने के लिए अलग-अलग चीज़ें बेचता था और वह महीनों बाद आता था।
   (ख) मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले एक बार अस्थिर हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती।

(ग) ...हाँ, बाबू जी, क्या पूछा था आपने, कितने में दीं!... दीं तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से हैं, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूँगा। विजय बाबू भीतर-बाहर दोनों रूपों में मुस्करा दिए। मन-ही-मन कहने लगे-कैसा है! देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा अहसान लाद रहा है। फिर बोले-''तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होंगे सभी को दो-दो पैसे में, पर अहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।'

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला-''आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है! यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज़ क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं-दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबू जी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में यह मुरली नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हज़ार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।''

(घ) बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोलभाव करने लगते। पूछते-''इछका दाम क्या है? औल इछका?'' खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगालियों से पैसे ले लेता और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर बच्चे उछलने-कूदने लगते।

(ङ) रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया। उसने मन-ही-मन कहा-खिलौनेवाला भी इसी तरह गा-गाकर खिलौने बेचा करता था।

(च) रोहिणी की बात सुनकर अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा-''मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा एक सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुंदर थी, मेरी प्राण थी। बच्चे ऐसे सुंदर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अंत में होंगे तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं-न-कहीं जनमें ही होंगे। उस तरह रहता, घुल-घुलकर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस-खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफ़ी हैं, इस तरह उसी सुखी को पा जाता हूँ।'' रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा-उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं।

(छ) अपने बच्चों को याद करके मिठाईवाला अत्यंत भावुक हो गया था। अत: 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'- मिठाईवाले ने ऐसा कहा और चल पड़ा।

(ज) स्वयं कीजिए।

5.

	मूल शब्द		**प्रत्यय**
(क)	पुलक	+	इत
(ख)	खेल	+	औने
(ग)	आवश्यक	+	ता
(घ)	मुरली	+	वाला
(ङ)	जायका	+	दार

6. (क) राधिका अपने भाई की बात सुनने के लिए उत्सुक थी।
(ख) तुम्हारी बात में जरा भी संशय नहीं है।
(ग) भगवान तो स्वयं अंतर्व्यापी हैं।
(घ) हम सब पर ईश्वर की सदैव असीम कृपा रहती है।
(ङ) महिमा ने जायकेदार भोजन खाया।

7. (क) सर्वोच्च, खच्चर; (ख) इज्जत, लज्जा; (ग) भिन्न, विभिन्न; (घ) वित्त, सत्तू; (ङ) हिम्मत, सम्मान; (च) उल्लास, हर्षोल्लास

8. (क) अनूठा; (ख) मूल्य; (ग) मिष्टान्न; (घ) बगीचा; (ङ) बाँसुरी; (च) बालक

9. (क) खट्टे; (ख) ऊपर; (ग) महँगे; (घ) कठोर; (ङ) नकली; (च) बुरा

10. बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोलभाव करने लगते। पूछते-''इछका दाम क्या है? औल इछका?'' खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर बच्चे उछलने! कूदने लगते और तब फिर खिलौनेवाला उसी प्रकार गाकर कहता-''बच्चो, को बहलाने वाला, खिलौनेवाला।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 पते की बात

1. (क) महात्मा गांधी ने सत्य-अहिंसा और प्रेम से देश को आजादी दिलाई थी। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था।
(ख) लोग महात्मा गांधी को प्रेम से बापू कहकर पुकारते हैं।
(ग) बापू सत्य, अहिंसा और प्रेम के पुजारी थे।

2. (क) i; (ख) ii; (ग) i; (घ) ii

3. (क)
अम्मा, अम्मा बताना, **क्या सच है जो कहती दादी,**
बिना हथियार उठाए सचमुच क्या बापू ने दी आजादी?
अम्मा, बोलो, गांधी जी ने, **कैसे चमत्कार दिखलाया,**
बिना लड़े ही ताकतवर दुश्मन को कैसे मार भगाया?

(ख)
देश बड़ा, **सब कुछ छोटा, बापू ने सबको बतलाया,**
आजादी अधिकार हमारा, यह सच जन-जन को समझाया।
सोया देश **उठा जब मुन्ना! अंग्रेजी सत्ता थर्रायी,**
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम से 'स्वराज' की आँधी आई!

4. (क) गांधी ने बिना कोई हथियार उठाए, सत्य-अहिंसा और प्रेम के बल पर देश को आजादी दिलवाई।
(ख) नहीं, गांधी जी ने हथियार का सहारा कभी नहीं लिया था। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।
(ग) बापू ने लोगों को बताया कि भारत माता के सामने सब कुछ छोटा और तुच्छ है। अत: सभी को एक साथ मिलकर भारत माता को अंग्रेजों से मुक्त कराना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने आजादी का अलख जगाया।
(घ) जाति के आधार पर किसी को स्पर्श न करना छुआछूत कहलाता है। गांधी जी ने अछूतों को भी गले लगाया और अपने बराबर मानकर उन्हें समाज का हिस्सा बनाया।
(ङ) गांधी जी ने स्वयं चरखा काता और लोगों को भी इसके लिए प्रेरित किया। इस प्रकार उन्होंने घर-घर खादी पहुँचाई थी।

5. (क) अहिंसा गांधी जी का हथियार है।
(ख) विज्ञान के इस युग में चमत्कार का कोई स्थान नहीं है।
(ग) इस कक्षा में छुआछूत मानने वालो का कोई काम नहीं है।
(घ) मेरी यह जैकेट खादी की है।
(ङ) गांधी जी जैसा दूसरा व्यक्ति मिल पाना असंभव है।
6. (क) आबादी, सादी; (ख) भत्ता; (ग) जगाया; (घ) हटे; (ङ) फलक; (च) डाकू, टापू
7. (क) झूठ; (ख) कमजोर; (ग) गुलामी; (घ) दोस्त

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 मेहनत का फल

1. (क) टीका दूसरे गाँव में मजदूरी करने के लिए गया था।
(ख) टीका की बीवी का नाम तारा था।
(ग) लुटेरों का यह उसूल था कि वे पूछ-पूछकर अतिरिक्त सामान या धन ले जाते थे। काम का कोई सामान नहीं लेते थे।
(घ) टीकाने गाँव जाते ही अपने बीवी-बच्चों को बहुत-से कपड़े-गहने दिलवाए और दूसरे ही दिन अपनी ससुराल जाने की बात करने लगा।
तारा भी यह बात सुनकर बहुत खुश हुई।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii
3. (क) सास ने टीका से; (ख) लुटेरों के सरदार ने टीका के ससुर से; (ग) टीका के ससुर ने लुटेरों के सरदार से; (घ) टीका के ससुर ने लुटेरों के सरदार से।
4. (क) यदि टीका दूसरे गाँव कमाने न गया होता तो वह अपने ही गाँव में मेहनत-मजदूरी करके गुजर बसर कर रहा होता।
(ख) यदि टीका ने अपना सारा धन खर्च न किया होता तो वह कोई व्यापार कर सकता था।
(ग) यदि टीका ने सास का कहना माना होता तो वह अपने घर पर होता और ससुराल में उसका अपमान न होता।
(घ) यदि ससुर ने टीका को लुटेरों को सौंप दिया होता न जाने उस पर क्या गुजर रही होती।
5. (क) आदमी; (ख) उसूल; (ग) दामाद; (घ) मेहनत
6. कपड़े — पिट्टी
सास — सोना
सिट्टी — गहने
बस खाना — ससुर
7. स्वयं कीजिए।
8. (क) टीका ने गाँव जाते ही अपने बीवी-बच्चों को बहुत-से कपड़े-गहने दिलवाए।
(ख) बस खाना और सोना ही टीका के जीवन का काम बन गया था। धीरे-धीरे ससुराल के लोग भी उससे उकता गए।
(ग) लुटेरों ने कहा-''चलो फिर बताओ, तुम्हारे पास कौन-सी चीज काम की नहीं है? उसे ही हम ले जाते हैं।'' टीका के ससुर बहुत देर तक सोचते रहे, फिर उन्होंने कहा-''ये हमारा दामाद टीका किसी काम का नहीं है। बस, ये खाता और सोता है। कुछ काम नहीं करता है। अपने घर में भी इसे कुछ काम नहीं है। तो, आप इसे ही ले जाओ।'' यह सुनकर टीका अपने ससुर से मिन्नतें करने लगा।
(घ) टीका के ससुर ने लुटेरों से कहा-''मैं उसूल के मुताबिक टीका तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता। मैं भूल गया था कि सारा दिन जब हम घर के बाहर खेतों में काम करते हैं, तब यह हमारे घर की रखवाली करता है। यह तो हमारे काम का आदमी है। इसे मैं तुम्हें कैसे सौंप दूँ?''
इस प्रकार टीका लुटेरों से बच गया।
9. (क) अश्व, तरंग; (ख) पत्नी, अर्धांगिनी; (ग) राशि, रुपये; (घ) आलय, गृह
10. (क) मेहनत; (ख) मृत्यु; (ग) नफरत; (घ) अल्प; (ङ) कम; (च) तीव्र
11. (क) बहुत अधिक मेहनत करना; (ख) अत्यधिक खुश होना; (ग) तुरंत चले जाना; (घ) परेशान होना; (ङ) होश खोना
12. (क) कपड़े; (ख) कमाना; (ग) दामाद; (घ) काम; (ङ) सींग; (च) मजदूरी
13. (क) पकाने; (ख) फीका; (ग) खोए; (घ) फर्राटा
14. (क) अक्षम्य; (ख) लापरवाह

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 रक्त और हमारा शरीर

1. (क) रक्त की कमी के कारण हमें थकान और कमजोरी महसूस होती है।
(ख) डॉक्टर दीदी सूक्ष्मदर्शी द्वारा एक स्लाइड की जाँच कर रही थीं।
(ग) रक्त में लाल कणों की कमी को एनीमिया कहते हैं।
(घ) हरी सब्ज़ी, फल, दूध, अंडा और गोश्त में ये तत्त्व उपयुक्त मात्रा में होते हैं।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) i; (घ) ii
3. (क) मिलीलीटर, चालीस; (ख) शरीर; (ग) शौचालय; (घ) कोशिश, मुकाबला, (ङ) अट्ठारह, स्वस्थ
4. अनिल — रक्त की बूँदें
दिव्या — खून की जाँचकर्ता
डॉक्टर दीदी — छोटी बहन
स्लाइड — बड़ा भाई
प्लाज्मा — प्लेटलैट कण
बिंबाणु — रक्त का तरल भाग
5. (क) डॉक्टर ने अनिल से; (ख) डॉक्टर दीदी ने अनिल से; (ग) डॉक्टर ने अनिल से; (घ) अनिल ने डॉक्टर दीदी से
6. (क) कुछ दिनों से दिव्या को हर समय थकान महसूस होती रहती थी। मन किसी काम में नहीं लगता, भूख पहले से कम हो गई थी।
(ख) अस्पताल में अनिल को अपनी ही जान-पहचान की डॉक्टर दीदी दिखाई दीं।
(ग) डॉक्टर दीदी ने दिव्या की उँगली से रक्त की कुछ बूँदें एक छोटी-सी शीशी में डाल दीं और स्लाइड पर लगा दीं।
(घ) दिव्या को एनीमिया की बीमारी हुई थी। यह संतुलित भोजन न लेने और पेट के कीड़ों के कारण होती है।
(ङ) लाल कण बनावट में बालूशाही की तरह ही होते हैं। गोल और दोनों तरफ अवतल, यानी बीच में दबे हुए। रक्त की एक बूँद में इनकी संख्या लाखों में होती है। यदि हम एक मिलीलीटर रक्त लें तो उसमें हमें चालीस से पचपन लाख कण मिलेंगे। इनके कारण ही हमें रक्त लाल रंग का नजर आता है। ये कण शरीर के लिए दिन-रात काम

करते हैं। साँस लेने पर साफ़ हवा से जो ऑक्सीजन हम प्राप्त करते हो उसे शरीर के हर हिस्से में पहुँचाने का काम इन कणों का ही है। इनका जीवनकाल लगभग चार महीने होता है। चार महीने के होते-होते ये नष्ट हो जाते हैं, लेकिन एक साथ नहीं, धीरे-धीरे। कुछ आज, कुछ कल, कुछ उससे अगले दिन...''

(च) पेट में कीड़े प्राय: दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अत: इनसे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ पानी ही पिएँ।

(छ) स्वेच्छा से या किसी की मदद हेतु किया गया रक्त का दान 'रक्तदान' कहलाता है। अट्ठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकते हैं।

7. (क) सुख; (ख) किस्सा; (ग) वक्त; (घ) दंग; (ङ) भून; (च) आग; (छ) आँच; (ज) सच्चा

8. (क) कहना-सुनना, बच्चे-कच्चे; (ख) खाता-पीता, क्रय-विक्रय; (ग) अपना-पराया, आगा-पीछा; (घ) ऊँच-नीच, ऊँचा-नीचा

9. लोहे के चने चबाना → कठिन काम करना
घी के दीये जलाना → खुशियाँ मनाना
दाल में काला होना → गड़बड़ होना
पानी-पानी होना → लज्जित होना

10. (क) हमारे विद्यालय की प्रयोगशाला में एक सूक्ष्मदर्शी रखी है।
(ख) मेरी जिज्ञासा थी कि मैं संसार के अन्य देशों के बारे में जान सकूँ।
(ग) आज सूर्य-ग्रहण होगा।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 चिट्ठी के अक्षर

1. (क) महीपाल सिंह ने लेखक को चिट्ठी भेजी थी तथा चिट्ठी में अखबार के लिए एक कविता भेजने के बारे में लिखा था।
(ख) साप्ताहिक अखबार पूरे बत्तीस पेज का था। उसमें शुरू से अंत तक गाँव की ही बातें की गई थीं।
(ग) अखबार निकालने से पूर्व महीपाल सिंह फौज में नौकरी करते थे।
(घ) लेखक महीपाल सिंह से मिलकर आश्चर्य चकित हुआ क्योंकि उनका एक ही हाथ था—बायाँ। दायाँ हाथ कंधे तक कटा हुआ था।

2. (क) iii; (ख) i; (ग) iii; (घ) i

3. (क) चिट्ठियाँ; (ख) अनायास, लिखावट; (ग) अखबार; (घ) बारात; (ङ) मस्तिष्क; (च) शादी; (छ) बचपन, निसान

4. चिट्ठी → लिफ़ाफा
अखबार → संपादक
सुंदर → लिखावट
सटीक → निशाना
रचनाएँ → अलमारी

5. (क) चिट्ठी के नीचे संपादक के हस्ताक्षर थे। संपादक का नाम महीपाल सिंह था।
(ख) लिखावट देखकर लेखक के मुँह से अनायास ही निकल पड़ा—वाह! बड़ी सुंदर लिखावट है।
(ग) लेखक ने अपनी रचनाएँ अखबार में छपवाई।
(घ) लेखक बराबर कविता भेजने लगा। महीपाल सिंह की चिट्ठियाँ भी समय-समय पर आया करती थीं। वे कभी कविता माँगते थे और कभी कहानी माँगते थे। लेखक बराबर उनकी इच्छाओं की पूर्ति कर दिया करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम पैदा हो गया।
(ङ) संपादक महोदय अपने बाएँ हाथ से लिखते थे।
(च) हाथ-मुँह धोने के बाद जब मैं महीपाल सिंह के साथ चाय पीने लगा, तो लेखक उनसे पूछा—''ठाकुर साहब, आप बाएँ हाथ से कब से लिख रहे हैं?'' यह सुनकर महीपाल सिंह अपने साथ हुई घटना के विषय में सोचने लगे।
(छ) एक दिन जब वह शत्रु को अपनी गोलियों का निशाना बना रहा था, तो पास ही एक बम फटा और उनका दाहिना हाथ कंधे तक उड़ गया।
(ज) सरकार ने उनके पढ़ने-लिखने और अखबार निकालने का पूरा इंतजाम कर दिया।
(झ) संपादक ने चार-पाँच साल तक अभ्यास के रूप में लिखी हुई अपनी रचनाएँ निकालकर लेखक के सामने रख दीं।

6. (क) पिताजी ने मेरे रिपोर्ट कार्ड पर हस्ताक्षर किए।
(ख) शनिवार को चाचाजी की साप्ताहिक छुट्टी रहती है।
(ग) कल संयोग से मेरा बहुत पुराना मित्र रास्ते में मिल गया।
(घ) मेरी छोटी बहन की सुंदर लिखावट देखकर सब आश्चर्यचकित हो गए।
(ङ) आलस्य का परिणाम असफलता है।

7. (क) महा + उत्सव; (ख) तिलक + उत्सव; (ग) वसंत + उत्सव; (घ) होलिका + उत्सव

8. (क) आदि; (ख) घृणा; (ग) प्रश्न; (घ) भीतरी; (ङ) अस्वस्थ; (च) अप्रत्यक्ष; (छ) बदसूरत; (ज) उधर; (झ) दायाँ; (ञ) बाहर

9. (क) अखबार में कविता छपी।
(ख) चिट्ठी की लिखावट बड़ी सुंदर लिखावट थी।
(ग) संपादक का नाम महीपाल सिंह था।
(घ) मेरा नाम अखिलेश शर्मा है।
(ङ) मैं महीपाल सिंह के साथ चाय पीने लगा।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 जैसी संगति बैठिए

1. (क) मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है क्योंकि वह समाज में ही जन्म लेता है, पलता है और बढ़ता है।
(ख) बुरे लोगों के साथ से हमारे विचार बुरे बनने लगते हैं और हम बुराई के रास्ते पर चलने लगते है।
(ग) यदि मनुष्य गुणवान, चिंतनशील व सज्जन लोगों की संगति में उठता-बैठता है, तो उसमें भी समय के साथ-साथ सद्वृत्तियाँ जाग्रत होने लगती हैं।
(घ) कक्षा में अच्छे अंक पाने वाले छात्र सदा प्रशंसा के पात्र होते हैं। ऐसे बालक दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत होते हैं।

2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii; (घ) ii

3. (क) बालक जब सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है, तब उसका मन कोमल व पवित्र होता है। वह जिस वातावरण में पलता-बढ़ता है, वहीं की भाषा व आचार-विचार सहज रूप से अपना लेता है।

(ख) बंगाल में एक नन्हीं बालिका को भेड़िया उठा ले गया था। कुछ वर्ष बाद वन अधिकारियों ने उस बालिका को भेड़िए के शिकंजे से मुक्त करवाया। परंतु इन कुछ वर्षों में वह बालिका भेड़ियों की भाँति चलना, फिरना, खाना तथा आवाज निकालना सीख गई थी।

(ग) सत्संगति सुगंध से भरपूर वह उपवन है, जिसकी कल्पना ही हमें तरो-ताजा कर देती है। सत्संगति शीतल जल का वह फव्वारा है, जिसके छींटें हमारे जीवन में स्फूर्ति लाते हैं तथा हम कुछ सृजनात्मक करने को आतुर हो उठते हैं। सत्संगति स्वाति नक्षत्र से टपकने वाली वह बूँद है, जो सहस्रो मुक्ताओं को जन्म दे सकती है, जो समस्त वातावरण को कपूर-सा सुगंधित कर महका सकती है।

(घ) युवावस्था में संगति की अहम भूमिका होती है। अकसर देखा गया है कि नवयुवक अपनी कुसंगत के कारण ही विभिन्न प्रकार के नशों के गुलाम बन जाते हैं। इसलिए संगति के प्रति सतर्क रहना आवश्यक है।

(ङ) साथियों की बुरी आदतें औरों पर भी प्रभाव डालती हैं। काजल की कोठरी में किसी को भी कालिख लग सकती है। सभी बुरे व्यसन कुसंगति से आते हैं। कुसंग से व्यक्ति व समाज, दोनों का ही अहित होता है।

4. (क) मानव; (ख) हिस्सा; (ग) जल्दी; (घ) साल
5. स्वयं कीजिए।
6. स्वयं कीजिए।
7. (क) जंगल; (ख) गंभीर; (ग) कुसंग; (घ) संदेह; (ङ) आँख; (च) अंधकार; (छ) अँधेरा; (ज) कहाँ; (झ) अत्यंत
8. (क) मैं न तो तुमसे डरता हूँ और न ही तुम्हारे गुंडे साथियों से।

(ख) मैं सत्य मार्ग पर चलने से कभी नहीं डरता।

9. स्वयं कीजिए।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 वनों का महत्त्व

1. (क) प्राचीन समय में ऋषि-मुनि वनों में आश्रम बनाकर रहते थे।

(ख) श्वास लेते समय हम शुद्ध वायु ग्रहण करते हैं।

(ग) कुछ जंगली-जानवरों; जैसे-हिरण, हाथी, नील गाय आदि का अस्तित्व ही पेड़-पौधों पर निर्भर है।

2. (क) iii; (ख) ii; (ग) iii; (घ) i
3. (क) व्यापारी ने बूढ़े बाबा से; (ख) बूढ़े बाबा ने व्यापारी से
4. स्वयं कीजिए।
5. (क) अमूल्य; (ख) जीवन; (ग) वायु; (घ) पानी; (ङ) फल; (च) धरोहर
6. (क) यदि पेड़-पौधे न हों तो संसार के सब जीव-जंतु भूख से तड़प-तड़पकर मर जाएँगे।

(ख) वर्षा से हमें पीने तथा सिंचाई करने के लिए जल उपलब्ध होता है।

(ग) हम जो वस्त्र पहनते हैं, उनके लिए कच्चा माल कपास, ऊन, रेशम आदि वृक्षों तथा उन पर आश्रित जीव-जंतुओं से ही मिलता है।

(घ) यदि लोभ के कारण इसको शीघ्रता से लूटा जाएगा, तो हम स्वयं लुट जाएँगे। पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाना निःसंदेह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।

इससे पर्यावरण-प्रदूषण की एक नई समस्या उठ खड़ी हुई है।

(ङ) पेड़ों को लगाना पुण्य और काटने को पाप बताया गया है। आँवला, पीपल, केला, बेर तथा तुलसी आदि कुछ वृक्षों की तो इतनी महत्ता बताई गई है कि उनकी पूजा का विधान किया गया है।

7. (क) जंगल; (ख) वृक्ष; (ग) हवा; (घ) बेटा
8. (क) अशुद्ध; (ख) आदि; (ग) स्वामी; (घ) दंड; (ङ) पुण्य; (च) अशुभ
9. (क) कमाने वाला; (ख) वातावरण दूषित करना; (ग) अपना नुकसान स्वयं करना; (घ) मृत्यु समीप होना
10. (क) कृतघ्न; (ख) सत्यवादी; (ग) दुर्लभ; (घ) जलचर

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 बस्तों की फरियाद

1. (क) आवाज मंच पर परदे के पीछे से आ रही थी।

(ख) आजकल कैसी-कैसी शिकायतें आ रहीं महामंत्री, अब तो बस्ते भी शिकायत करने लगे। जमीन-जायदाद की शिकायतें तो आती हैं, मारपीट और स्त्री-पुरुषों के झगड़ों की शिकायतें आना भी समझ में आता है, पर...पर...ये बस्ते! आश्चर्य है। इन्हें क्या कष्ट हो गया, समझ से परे है महामंत्री।

(ग) नाटक के अंत में मंच के पीछे से ''महाराज की जय हो, महाराज की जय हो'' आवाज़ आती है।

2. (क) ii; (ख) i; (ग) i; (घ) ii; (ङ) i
3. (क) प्रतिनिधि, इजाजत; (ख) बेल्टों; (ग) उत्तीर्ण; (घ) पढ़ाई, सुविधा; (ङ) शाला प्रांगण; (च) कॉपियों; (छ) चावल, अंदाज
4. (क) बस्ते ने महाराज से; (ख) महामंत्री ने महाराज से; (ग) महाराज ने महामंत्री से; (घ) नन्हा बस्ते ने महाराज से; (ङ) बच्चा ने महाराज से; (च) बच्चे ने महाराज से; (छ) महाराज ने बच्चे से; (ज) महामंत्री ने महाराज से
5. (क) सही; (ख) सही; (ग) गलत; (घ) गलत; (ङ) सही
6. (क) राजमहल को हजारों बस्तों ने इंसाफ पाने के लिए घेर रखा था।

(ख) दरबार में आने वाले बच्चे फर्स्ट स्टैंडर्ड, फोर्थ स्टैंडर्ड, सेवंथ स्टैंडर्ड, टेंथ स्टैंडर्ड और टुवेल्थ सटैंडर्ड के थे।

(ग) यह कौन-सा प्ले है? कोई खेल का मैदान है क्या? हमारे जमाने में तो खेल के मैदान में घुड़सवारी, तलवारबाजी, कुश्ती, कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल वगैरह होती थीं। कहाँ पर है यह बचपन का मैदान?

(घ) यह कार्य तो घर में भी हो सकता है। माता-पिता, दादा-दादी के संरक्षण में सीखेंगे तो उन्हें स्नेह-दुलार भी मिलेगा, बच्चे कुछ अधिक ही ग्रहण करेंगे।

(ङ) बच्चों के दादा-दादी अपने गाँव-कस्बों के ही होकर रह गए हैं।

(च) शिक्षको ने उसे हिदायत दी है कि अगर बस्ते के वजन संबंधी कोई शिकायत की तो शाला से निष्कासित कर देंगे।

(छ) एक सैनिक वजन तौलने की मशीन ले आता है।

(ज) महाराज, बहुत ही भारी होता है बस्ता। हम तो शाला बस से जाते हैं फिर भी बस स्टैंड तक तो लादकर ही ले जाना पड़ता है। शाला में भी, सड़क से भीतर तक जाने में तो लादना पड़ता है। महाराज कुछ गरीब बच्चे तो घर से पैदल ही बस्ता लादकर शाला जाते हैं। बच्चे की आँख में आँसू जाते हैं। यह कहते हुए

(झ) बच्चे का वजन तेरह किलो दो सौ ग्राम था।

(ञ) हमारे पूर्वज भी बस्ता लेकर नहीं जाते थे। गुरुकुल में ही सारी व्यवस्था होती थी। वेद, पुराण, स्मृतियाँ और आयुर्वेद के बड़े ग्रंथों के लिए कभी भी, भारी-भरकम किताबों, कॉपियों की जरूरत नहीं पड़ी। पुरानी आध्यात्मिक पद्धति अब आधुनिक हो चुकी है। कंप्यूटर का युग है तो बस्तों का क्या काम? हम बस्तों का चलन बंद कर देंगे। शाला की कक्षाओं में हर टेबल पर कंप्यूटर होंगे, हर घर में कंप्यूटर होंगे। किताबें बंद, कॉपियाँ बंद। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। जब किताबें-कॉपियाँ ही नहीं होगी तो बस्तों का क्या काम।

7. (क) आजकल प्याज के दाम बहुत बढ़ गए हैं।

(ख) सरकार के प्रतिनिधि ने जनता को साफ-सफाई की जानकारी दी।

(ग) कक्षा से बाहर जाने से पहले अध्यापिका से इजाजत तो ले लो।

(घ) हमें प्रात: सभी बड़ों का अभिवादन करना चाहिए।

(ङ) मैं कितना खुशनसीब हूँ कि तुम मेरे मित्र हो।

(च) मुझसे उसकी बातें अब बर्दाश्त नहीं होतीं।

8. (क) आवाजें; (ख) पंपपराएँ; (ग) शिकायतें; (घ) वाहनों; (ङ) बस्ते; (च) शिक्षकगण; (छ) नजरें; (ज) कंधे; (झ) सीढ़ियाँ; (ञ) विद्यार्थीगण

9. (क) बच्ची; (ख) प्रिया; (ग) महारानी; (घ) शिष्या; (ङ) दादी; (च) शिक्षिका; (छ) पिता; (ज) छात्रा

10.

	उपसर्ग	मूलशब्द
(क)	अभि	वादन
(ख)	उप	स्थित
(ग)	महा	मंत्री

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 दादी माँ

1. (क) दादी माँ रामी का चाची पर बिगड़ रही थीं।

(ख) लेखक बारात में बीमारी की बजह से नहीं जा सका।

(ग) राघव लेखक का ममेरा भाई था।

2. (क) i; (ख) iii; (ग) iii

3. (क) शक्तिधारी, माथे; (ख) दवाओं; (ग) कुनैन, तिताई; (घ) अनुपस्थिति, विलंब; (ङ) वात्याचक्र

4. (क) दादी माँ को गँवई-गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। गाँव में कोई बीमार होता, उसके पास पहुँचतीं और वहाँ भी वही काम। हाथ छूना, माथा छूना, पेट छूना। फिर भूत से लेकर मलेरिया, सरसाम, निमोनिया तक का अनुमान विश्वास के साथ सुनातीं। महामारी और विशूचिका के दिनों में रोज़ सवेरे उठकर स्नान के बाद लवंग और गुड़-मिश्रित जलधार, गुग्गल और धूप। सफ़ाई कोई उनसे सीख ले। दवा में देर होती, मिश्री या शहद खत्म हो जाता, चादर या गिलाफ नहीं बदले जाते, तो वे जैसे पागल हो जातीं।

(ख) दादा की मृत्यु के बाद कुकुरमुत्ते की तरह बढ़ने वाले, मुँह में राम बगल में छुरी वाले दोस्तों की शुभचिंता ने स्थिति और भी डावाँडोल कर दी। दादा के श्राद्ध में दादी माँ के मना करने पर भी पिता जी ने जो अतुल संपत्ति व्यय की, वह घर की तो थी नहीं। इसलिए घर की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी।

(ग) स्वयं कीजिए।

5. (क) अनुकूल; (ख) भारी; (ग) ऊष्म; (घ) असाधारण; (ङ) साधारण; (च) श्राप

6. (क) च् + ई + अँ + ट् + इ + य् + ओ + अँ

(ख) ध् + उ + अँ + ध् + अ + ल् + ई

(ग) अ + न् + उ + प् + अ + स् + थ् + इ + त् + इ

7.

ऑर्डर	मैंने रेस्टॉरेंट में फोन करके पिज्जा का ऑर्डर दे दिया है।
बॉर्डर	आजकल बॉडर पर दुश्मन की संदिग्ध गतिविधियाँ जोरों पर हैं।
ऑक्टोपस	समुद्र की तली में बहुत-से ऑक्टोपस हैं।
ऑक्सीजन	श्वास लेने के लिए ऑक्सीजन अत्यावश्यक है।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 हृदय-परिवर्तन

1. (क) प्रस्तुत कहानी के लेखक भीष्म साहनी हैं। यह कहानी उनके बचपन के सहपाठी बोधराज के हृदय परिवर्तन पर आधारित है।

(ख) नहीं।

(ग) बोधराज को दूसरे को कष्ट पहुँचाने में चैन मिलता था।

2. (क) i; (ख) iii; (ग) ii

3. (क) आनंद; (ख) तितली, उँगलियों; (ग) गुलेल, अचूक; (घ) शहतीर, मटरगश्ती; (ङ) कंकड़, टीन

4. (क) सही; (ख) सही; (ग) गलत; (घ) सही; (ङ) गलत

5. (क) बोधराज बहुत कठोर हृदय वाला बालक था और उसके हाथ में सदा एक गुलेल रहती थी। दूसरों को कष्ट पहुँचाने में उसे बड़ा आनंद आता था।

(ख) चोर अपने पास गोह को रखते हैं। वे दीवार फाँदने के लिए गोह का इस्तेमाल करते हैं। वे गोह की एक टाँग में रस्सी बाँध देते हैं। फिर जिस दीवार को फाँदना हो, रस्सी झुलाकर दीवार के ऊपर की ओर फेंकते हैं। दीवार के साथ लगते ही गोह अपने पंजों से दीवार को पकड़ लेती है। उसका पंजा इतना मजबूत होता है कि फिर रस्सी को दस आदती भी खींचें तो गोह दीवार को नहीं छोड़ती। चोर उसी रस्सी के सहारे दीवार फाँद जाते हैं।

(ग) ऊपर पहुँचकर चोर उसे थोड़ा-सा दूध पिलाते हैं, दूध पीते ही गोह के पंजे ढीले पड़ जाते हैं।

(घ) उसी वक्त घोंसले में से चीं-चीं की ऊँची आवाजें आने लगीं और मैना के बच्चे पंख फड़फड़ाकर चिल्लाने लगे।

हम दोनों निश्चेष्ट से खड़े हो गए, यह देखने के लिए कि अब चील क्या करेगी। हम दोनों टकटकी बाँधे चील की ओर देखे जा रहे थे।

(ङ) कबूतर अलग से दूसरी ओर शहतीर पर गुटरगूँ-गुटरगूँ करते हुए मटरगश्ती कर रहे थे।

(च) घोंसले में से छोटे-छोटे बच्चे थे। की पीली-पीली नन्हीं चोंचें थीं।

(छ) बोधराज ने झट से गुलेल लेखक को थमा दी और जेब से पाँच-सात कंकड़ निकालकर लेखक की हथेली पर रखे। ''तुम चील पर गुलेल चलाते जाओ, उसे बैठने नहीं देना।'' उसने कहा और स्वयं भागकर दीवार के साथ रखी मेज को फर्श के बीचों-बीच लाने लगा।

लेखक गुलेल चलाना नहीं जानता था। दो-एक बार में कंकड़ रखकर गुलेल चलाई, लेकिन इसी बीच चील गोदाम के शहतीर पर जा बैठी थी।

इधर बोधराज मेज को मैना के घोंसले के नीचे ले आया, फिर उसने एक टूटी हुई कुर्सी उस पर रख दी और उसके ऊपर खड़ा हो गया और धीरे-धीरे कुर्सी पर से उतरकर मेज पर आ गया और घोंसले को थामे हुए ही छलाँग लगा दी।

''चलो, बाहर निकल चलो'', उसने कहा और दरवाजे की ओर लपका।

गोदाम में से निकलकर लेखक और बोधराज गैराज में आ गए। गैराज में एक ही बड़ा दरवाजा था और दीवार में एक छोटा-सा झरोखा ''यहाँ पर चील नहीं पहुँच सकती'', बोधराज ने कहा और इधर-उधर देखने लगा। थोड़ी देर में घोंसले में बैठे मैना के बच्चे चुप हो गए।

(ज) चील से मैना के बच्चों की रक्षा करने की घटना ने बोधराज का हृदय परिवर्तित कर दिया। जब बोधराज लेखक के घर आया तो न तो उसके हाथ में गुलेल थी और न जेब में कंकड़, बल्कि जेब में बहुत-सा चुग्गा भरकर लाया था।

6. (क) मेरे कई सहपाठी कार से स्कूल आते हैं।

(ख) बर्तन में रखा दूध दही में परिवर्तित हो गया।

(ग) मुझे कल मधुमक्खी ने डंक मार दिया।

(घ) मेरे कमरे में रोशदान से धूप आती है।

(ङ) चील ने झपट्टा मार कर रोटी छीन ली।

7. (क) जवानी; (ख) छोटा; (ग) नर्म; (घ) नया; (ङ) चेष्टावान; (च) पुण्य; (छ) बेचैन; (ज) असंतुलन

8. (क) मृदुभाषी; (ख) निरुत्साह; (ग) कृतघ्न; (घ) निराधार; (ङ) अल्पायु; (च) अद्‌वितीय

9. (क) हर्ष, खुशी, उल्लास; (ख) खग, विहग, नभचर; (ग) माता, जननी, धागी; (घ) दुग्ध, क्षीर, पय; (ङ) सर्प, विषधर, भुजंग

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 जेबखर्च

1. (क) नन्हा मेई माँ से जेबखर्च के पैसे लेकर फर्श के नीचे डाल देता था।

(ख) प्रतिदिन सवेरे माँ जब काम पर जाने के लिए निकलतीं तो उसे जेबखर्च के लिए पाँच पैसे देती थीं।

(ग) एक दिन मशीन पर काम करते समय माँ के हाथ में चोट लग गई। चोट बहुत गहरी थी। मेई की माँ काम पर नहीं जा पायीं और उन्होंने एक महीना घर पर आराम किया। अब नन्हे मेई का जेबखर्च भी मिलना बंद हो गया था।

2. (क) ii; (ख) iii; (ग) ii

3. (क) मम्मी ने मेई से; (ख) श्रीमान जी ने मम्मी से

4. स्वयं कीजिए।

5. हाथ — छेद
   फर्श — मशीन
   सुरक्षित — उपयोगी
   बचत — जगह

6. (क) नन्हे मेई ने लकड़ी के फर्श को खोला और नीचे हाथ डालकर हाथ भरकर पैसे निकाले और बोला-''माँ, देखो मेरे पास बहुत सारे पैसे हैं। इन्हें मैं दो साल से जमा कर रहा था। तभी तो आज इतने ज़्यादा हो गए हैं।''

माँ ने नन्हें मेई को गले से लगा लिया।

(ख) छैनी ढूँढ़ी और छैनी से फर्श को दो-तीन बार ठोका।

(ग) माँ ने पच्चीस रुपये उधार लिए थे।

(घ) एक दिन माँ का हाथ मशीन में आ गया और उन्हें चोट लग गई।

(ङ) नन्हा मेई धीरे-से माँ के पीछे आकर खड़ा हो गया और बोला-''माँ, मेरे पास पैसे हैं।''

माँ आश्चर्य से नन्हे मेई की ओर देखकर बोलीं-''तेरे पास पैसे कहाँ से आए?''

7. (क) जननी, धात्री; (ख) हस्त, कर; (ग) आलय, गृह; (घ) मनुष्य, मानव

8. (क) असुरक्षित; (ख) अनुपयोगी; (ग) अंत; (घ) सरल

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-20 अक्षरों का महत्त्व

1. (क) हमारी यह धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी है।

(ख) आदमी ने इस धरती पर कोई पाँच लाख साल पहले जन्म लिया।

(ग) वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था।

2. (क) ii; (ख) ii; (ग) ii; (घ) i

3. (क) अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तब से मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जब से लिखना शुरू किया तब से 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है जब से आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं।

(ख) अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं।

(ग) प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए; जैसे- पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

(घ) स्वयं कीजिए।

4.

	मूल शब्द	उपसर्ग
(क)	सफल	अ
(ख)	दृश्य	अ
(ग)	उचित	अन
(घ)	आवश्यक	अन
(ङ)	न्याय	अ
(च)	भिन	अ

5. स्वयं कीजिए।

6. (क) किताब; (ख) विश्व; (ग) प्रतिदिन; (घ) अखबार; (ङ) राष्ट्र; (च) वर्ष

7. (क) नए; (ख) मृत्यु; (ग) एक; (घ) समाप्त; (ङ) असभ्य; (च) अज्ञान

8. (क) मेरा मित्र दुनिया की सैर करना चाहता है।

(ख) आज भी करोड़ों लोगों के पास अपना घर नहीं है।

(ग) ईश्वर के घर में देर है अँधेर नहीं।

(घ) चोरों ने किसी औजार से ही यह ताला तोड़ा होगा।

(ङ) ज्ञान के अभाव में हमारा अस्तित्व एक पशु के समान है।

(च) आज दुनिया भर के वैज्ञानिक अंतरिक्ष की खोज कर रहे हैं।

9. (क) अक्षर; (ख) तादाद; (ग) कल्पना; (घ) अस्तित्व; (ङ) वनस्पति; (च) लिपी

10. (क) i; (ख) iii; (ग) i

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

BOOK-8

पाठ-1 मेरा नया बचपन

1. (क) प्रत्येक मनुष्य का बचपन तरह-तरह के सुखों, उमंगों व मस्ती से भरा होता है। अत: कवयित्री को अपना बचपन याद आ रहा है।

(ख) 'माँ काओ' से पता चलता है कि बच्चे जो कुछ भी उठाकर खाने लगते हैं वही बड़ों को भी खाने के लिए देते हैं।

(ग) माँ को बच्चों के साथ बच्चा बनना इसलिए अच्छा लगता है कि बच्चों के साथ खेलकर माँ स्वयं अपने बचपन के पलों की पुनरावृत्ति कर पाती है।

(घ) अपनी पुत्री के रूप में कवयित्री ने अपना खोया बचपन पाया।

(ङ) स्वयं कीजिए।

2. (क) iii; (ख) ii; (ग) i; (घ) iii

3. (क) बचपन का समय जीवन के ऊँच-नीच, दुख-दर्द सब परेशानियों से परे परम सुख का समय होता है। अत: कवयित्री ने बचपन को 'अतुलित आनंद देने वाला' कहा है।

(ख) कवयित्री ने बचपन की विशेषताओं; जैसे- चिंता रहित खेलना-खाना, स्वच्छंद इधर-उधर आना-जाना और अपनी बात मनवा लेना आदि का वर्णन किया है।

(ग) बच्ची के रोने पर माँ ने उसे गोद में उठा लिया और उसके आँसुओं से गीले गालों को चूम-चूमकर सुखा दिया।

(घ) जब कवयित्री अपनी पुत्री के साथ बच्चों की तरह खेलने लगती है उस पल वह स्वयं एक बच्ची बन जाती है।

(ङ) कवयित्री अपने बचपन से निर्मल शांति, एवं प्राकृतिक विश्रांति माँगती है जो कि सारी दुख-तकलीफ मिटा देती है।

4. (क) दुखी; (ख) मृत्यु; (ग) रोना; (घ) पुरातन; (ङ) मधुर; (च) निडर

5. (क) माता, अंबिका, जननी; (ख) जंगल, कानन, विपिन; (ग) पुष्प, सुमन, कुसुम; (घ) वेदना, पीड़ा, कष्ट

6. (क) रोना; (ख) मधुर; (ग) पुरातन; (घ) दुख; (ङ) मृत्यु

7. (क) पुल्लिंग; (ख) पुल्लिंग; (ग) पुल्लिंग; (घ) स्त्रीलिंग; (ङ) पुल्लिंग; (च) पुल्लिंग; (छ) पुल्लिंग; (ज) पुल्लिंग; (झ) स्त्रीलिंग; (ञ) स्त्रीलिंग

8. (क) माँ काम छोड़कर आती है और मुझे गोद में उठा लेती है।

(ख) मेरे मन का दुख वह आकर मिटाता था।

(ग) उसके साथ मिलकर स्वयं मैं भी बच्ची बन जाऊँगी।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 जीवन का लक्ष्य

1. (क) सफलता प्राप्त करने पर साधारणतया लोगों का मन अनेक प्रकार की खुशियों, उत्साह और प्रेरणाओं से भर जाता है।

(ख) कोई भी कदम उठाने से पहले आवश्यक विचार करना चाहिए कि आखिर हम चाहते क्या हैं क्योंकि जब तक लक्ष्य साधा नहीं जाएगा, उसे पाना दूभर है।

(ग) दूसरों का मुँह ताकने वाले कभी सफल नहीं हो पाते।

(घ) नहीं, एक चित्रकार यदि मशीनें ठीक करने का काम करने लगे तो वह सफल नहीं हो पाएगा।

2. (क) iv; (ख) i; (ग) iv

3. (क) व्यक्ति को एक मंज़िल चुननी होगी। इसके अभाव में तो वह वहीं खड़ा प्रतीक्षा करता रहेगा और समय बीत जाएगा। इसलिए जीवन की सफलता के लिए अपनी मंज़िल का सही समय पर चुनाव अत्यंत आवश्यक है।

(ख) प्रत्येक व्यक्ति की किसी खास काम में रुचि हुआ करती है। इस रुचि को पहचानने के लिए कभी कम तो कभी अधिक प्रयोग करना पड़ता है। कोई भी कदम उठाने से पूर्व आवश्यक विचार करना चाहिए कि आखिर हम चाहते क्या हैं? हमारा लक्ष्य क्या है? जब तक लक्ष्य साधा नहीं जाएगा, उसे पाना दूभर है। यह लक्ष्य भी रुचि के अनुकूल ही होना चाहिए। हर कोई अपनी रुचि के क्षेत्र में ही अच्छा काम कर

सकता हैं।

(ग) जीवन में सफलता पाने के लिए उसमें पूरी तरह डूब जाना जरूरी है। इसका महत्त्व नहीं है कि आप क्या काम कर रहे हैं महत्त्वपूर्ण यह है कि आप उसे किस तरह कर रहे हैं। दूसरे का मुँह ताकने वाले कभी सफल नहीं होते। पर सच तो यह है कि अवसर आपको नहीं तलाशता। आपको अवसर की तलाश करनी पड़ती है।

(घ) संसार के जो व्यक्ति अपने जीवन-लक्ष्य, मानवता को आधार बनाकर चुनते हैं, वे महान होते हैं। उनके विचार और काम, समय की सीमा पार कर अमर हो जाते हैं। वे अन्यों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास से भरे होते हैं। उनके चरित्र की आभा उनके मुख पर झलकती है।

(ङ) लक्ष्य सिद्धि का मुख्य आधार परिश्रम है। संकल्प दृढ़ हो तो क्या नहीं हो सकता? ताजमहल जैसी कलात्मक भव्य इमारत बन सकती है। चीन की सैकड़ों मील लंबी दीवार, मिस्र के महान पिरामिड मनुष्य के पक्के इरादे तथा मेहनत के ही परिणाम हैं। पक्के इरादे के धनी लोग ही एवरेस्ट की चोटी पर विजय पताका फहरा पाए, अटलांटिक महासागर को लाँघ पाए और चाँद तक पहुँच सके।

4. (क) की; (ख) का; (ग) की, कि; (घ) कि; (ङ) की, का; (च) का

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 लालू

1. (क) लालू को दूसरों को डराने में मजा आता था इसलिए वह सबको डराता था।

(ख) लालू सब तरह के कामों का मिस्तरी था। जैसे, स्कूल के टूटे छाते ठीक करना, स्लेट की मढ़ाई, फटे कुरते को सिलना आदि। उसने कभी किसी काम के लिए मना नहीं किया तथा काम भी बहुत अच्छा करता था।

(ग) 'दूसरा बकरा काँप रहा था' — इससे पता चलता है कि जानवर भी हमारी तरह संवंदनशील होते हैं। वे भी दुख-दर्द अच्छा-बुरा सब समझते है।

(घ) लालू ने मनोहर चट्टोपाध्याय को ही पकड़ा क्योंकि उसी के यहाँ काली पूजा व बलि का कार्यक्रम होना था।

2. (क) i; (ख) iv; (ग) iii

3. (क) लालू ने काली पूजा में बकरी काटने से इनकार कर दिया क्योंकि वह बकरा नहीं काटना चाहता था।

(ख) लालू ने खड्ग को सिर पर घुमाया और आँखें लाल-लाल कर बोला, ''बकरा नहीं है। यह नहीं हो सकता। जय माँ काली। अब तो मैं किसी और की बलि जरूर चढ़ाऊँगा।'' वह कूदकर बलिवेदी पर चढ़ा। जमीन पर पड़ी माला उठाई और खड्ग को गोल-गोल घुमाते हुए बोला, ''अब तो मैं जिसे पकड़ लूँगा, उसे ही बलि चढ़ाऊँगा मैं तो माँ को अवश्य प्रसन्न करूँगा।''

(ग) चटटोपाध्याय फफककर रो पड़े और बोले, ''भैया, वह जगत जननी है। माँ किसी को मारने का आदेश नहीं दे सकती।''

(घ) पुरोहित के रोने ने कारण लालू को हँसी आ गई और वह अपनी हँसी रोक न पाया। उसने खड्ग ज़मीन पर पटका और घर चला गया।

(ङ) लालू के नाटक के परिणामस्वरूप गाँव में निर्दोष जीवों की बलि की प्रथा को बंद कर दिया गया।

4. (क) लालू सबकी सहायता करता था।

(ख) अपराधी को सज़ा अवश्य मिलती है।

(ग) सभी बच्चे लालू की प्रशंसा करते हैं।

(घ) हम अपना कार्य समय पर करेंगे।

(ङ) चट्टोपाध्याय मंदिर के पीछे छिपे थे।

5. (क) सब उसे लालू नाम से पुकारते थे।

(ख) लालू में असाधारण ताकत थी, वैसा ही असीम साहस भी था।

(ग) मुझे याद नहीं आता कि उसने कभी किसी काम के लिए मना किया हो।

(घ) सब सोच रहे थे कि बलि नहीं दी गई तो पूजा ही चौपट हो जाएगी।

(ङ) वह नींद से उठा और बोला — नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।

(च) चिंता दूर हुई। जल्दी से बकरे को तैयार किया गया। माथे पर सिंदूर लगाकर, गले में माला पहनाई गई।

6.

	समस्त पद	समास
(क)	गुण-दोष	द्वंद्व समास
(ख)	पीतांबर	कर्मधारय समास
(ग)	रेखांकित	तत्पुरुष समास
(घ)	त्रिफला	द्विगु समास

7.

	विग्रह	समास
(क)	विद्या के लिए आलय	संप्रदान तत्पुरुष
(ख)	दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण	बहुव्रीहि समास
(ग)	नौ ग्रहों का समूह	द्विगु समास
(घ)	वन में वास	तत्पुरुष समास

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 पंच परमेश्वर

1. (क) अलगू के पिता पुराने विचारों के थे। उन्हें शिक्षा की अपेक्षा गुरु की सेवा पर विश्वास था। वे कहते कि विद्या पढ़ने से नहीं गुरु के आशीर्वाद से आती है।

(ख) जुम्मन का ऐसा प्रताप था कि उनके लिखे कागज़ पर कचहरी का आदमी भी कलम नहीं उठा पाता था। दूर-दूर तक के डाकिए, पुलिसवाले, चपरासी तक उनकी कृपा की इच्छा रखते थे।

(ग) अलगू के पंच बनने पर जुम्मन को भरोसा हो गया था कि अब वही जीतेगा।

(घ) दिनभर में तीन-तीन, चार-चार बार बैल पर बोझा लादता। न चारा, न पानी, बस दिन भर दुगुना-तिगुना बोझा लाद देता।

(ङ) अलगू ने फैसला सुनाया कि खाला को महावार खर्च दिया जाए।

2. (क) ii; (ख) i; (ग) ii

3. (क) जुम्मन शेख और अलगू चौधरी गहरे मित्र थे। दोनों का आपस में खूब प्यार और विश्वास था। दोनों मिल-जुलकर साझे में खेती और लेन-देन करते थे। जुम्मन हज करने गए तो अपना घर चौधरी के भरोसे छोड़ गए। उन दोनों की दोस्ती गाँव भर में एक मिसाल थी।

(ख) औरतों में जरा अनबन रहती है। अब खाला मुझसे अलग होने का

अलग खर्च माँग रही हैं। जायदाद कितनी थी, यह सब जानते हैं। माहवार खर्च मुझसे न दिया जाएगा। मुझे बस यही कहना है।''

अलगू ने कचहरी की तरह जुम्मन से ढेरों सवाल पूछे। रामधन मिश्र इन सवालों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन मन-ही-मन हैरान थे कि क्या इतने दिनों की दोस्ती काम न आएगी।

अलगू ने फ़ैसला सुनाया कि खाला को माहवार खर्च दिया जाए। फैसले से दोनों की दोस्ती की जड़ें हिल गईं।

(ग) 'दोस्ती की जड़ें हिलने' से अभिप्राय है दोस्तों के बीच मतभेद होना या दोस्ती में दरार आना।

(घ) पंचों ने दोनों तरफ़ से सवाल-जवाब किए फिर आपस में विचार करने लगे। जुम्मन ने मन-ही-मन सोचा - मैं इस समय न्याय के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से जो निकलेगा, वह खुदा का हुक्म होगा। मेरे मन में कोई भी विकार नहीं आना चाहिए। मैं सत्य से जरा भी न टलूँगा।

(ङ) तभी जुम्मन शेख अलगू के पास आए और उसे गले लगाकर बोले, ''भैया, जब तुमने मेरा फैसला सुनाया था तो मैं तुम्हें दुश्मन समझ बैठा था। आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई दोस्त रहता है, न दुश्मन। पंच की जुबान से तो खुदा बोलता है।''

4. (क) गए; (ख) आया; (ग) गूँजते रहे; (घ) सुनाया; (ङ) गिर पड़ा
5. (क) पंचायत; (ख) पंच; (ग) साझेदारी; (घ) सरपंच; (ङ) विधवा

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 मानवता ही विश्व सत्य

1. (क) विज्ञान के प्रचार-प्रसार व नित्य नए आविष्कारों के कारण सब देशों के लोग निकट आ सकते हैं।

(ख) ग्रह-उपग्रह में धरती का आँचल फहराने से तात्पर्य है कि मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में इतनी उन्नति कर ली है कि अब उसने अंतरिक्ष में भी कदम रख दिया है।

(ग) वैज्ञानिक आविष्कारों का सदुपयोग करके धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

(घ) इस कविता का मुख्य संदेश यही है कि परमाणु युग के आने से सृष्टि का भला हो। परमाणु शक्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यें में होना चाहिए, विनाश कार्यो में नहीं।

2. (क) iii; (ख) iv; (ग) ii
3. (क) कुछ समय पूर्व देश-विदेश की सीमाओं का इतना महत्त्व था कि वहाँ के लोगों के लिए आपस में विचारों का आदान-प्रदान कठिन था। परंतु विज्ञान ने दूरियों को इतना घटा दिया है कि लाखों मील दूर बैठे व्यक्ति से पलक झपकते ही बात की जा सकती है।

(ख) आज मनुष्य की कीर्ति पताका चारों दिशाओं में फहरा रही है। उसने प्रत्येक क्षेत्र में काफी उन्नति की है।

(ग) मानव युगों से अंतरिक्ष की सैर करने के स्वप्न देख रहा था और वह विज्ञान के चमत्कार ने पूरा किया है।

(घ) धरती का जीवन मंगलमय तभी हो पाएगा जब परमाणु शक्ति सहित विज्ञान के प्रत्येक आविष्कार का उपयोग मानव-भलाई के लिए होगा, विनाश के लिए नहीं।

4. (क) मनुष्य, नर, आदमी; (ख) धरती, भूमि, वसुधा; (ग) दौलत, द्रव्य, संपति; (घ) परहित, उपकार, भलाई
5. (क) दिग्विजय; (ख) पौराणिक; (ग) संभव; (घ) आत्मसात
6. (क) दुर्जय — द् + उ + र् + ज् + अ + य् + अ

(ख) विरोध — व् + इ + र् + ओ + ध् + अ

(ग) ग्रह — ग् + र् + अ + ह् + अ

(घ) संपन्न — स् + अ + म् + प् + अ + न् + न् + अ

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 साइकिल की सवारी

1. (क) लेखक जब किसी को साइकिल चलाते या हारमोनियम बजाते देखता, तो उस समय उसे स्वयं पर दया आती थी।

(ख) बेटे को साइकिल चलाते देखकर लेखक के मन में स्वयं भी साइकिल की सवारी सीखने का विचार आया।

(ग) लेखक यह नहीं चाहता था कि किसी को पहले से पता चले कि वह साइकिल चलाना सीख रहा है अत: वह पुराने कपड़े मरम्मत कराने का कारण अपनी पत्नी को नहीं बताना चाहते थे।

(घ) लेखक उस्ताद को फ़ीस देने की बात सुनकर इसलिए खुश हुए कि फीस लेकर उस्ताद उन्हें साइकिल अवश्य सिखा देगा।

(ङ) स्वयं कीजिए।

2. (क) ii; (ख) i; (ग) i
3. (क) हारमोनियम, (ख) गुरु; (ग) विद्याएँ; (घ) बुद्धिमान; (ङ) उधेड़बुन
4. (क) ''आखिर साइकिल से एक या दो बार गिरेंगे या नहीं? और गिरने से कपड़े फटेंगे या नहीं? जो मूर्ख हैं, वे नए कपड़ों का नुकसान कर बैठते हैं। जो बुद्धिमान हैं, वे पुराने कपड़ों से काम चलाते हैं।'

इधर लेखक ने बाज़ार से मरहम के दो डिब्बे खरीद लिए कि चोट लगने पर उसका उसी समय इलाज किया जा सके।

(ख) श्रीमती जी बोली, ''मैं तो चाहती है तुम हवाई जहाज़ चलाओ, यह साइकिल क्या चीज़ है! पर तुम्हारे स्वभाव से डर लगता है। एक बार गिरोगे तो देख लेना, साइकिल वहीं फेंक-फाँक कर चले आओगे।''

(ग) इस पर तिवारी जी ने कहा, ''अरे साहब! क्या यह तिवारी मर गया है? शहर में रहना हराम कर दूँ, बाज़ार से निकलना बंद कर दूँ। फ़ीस लेकर भाग जाना कोई हँसी-खेल है?''

जब हमें विश्वास हो गया कि इसमें कोई धोखा नहीं है तब हमने फ़ीस के रुपये लाकर उस्ताद को भेंट कर दिए।

(घ) लेकिन अभी घर से निकले ही थे कि बिल्ली रास्ता काट गई, और एक लड़के ने छींक दिया। क्या कहें, हमें कितना क्रोध आया उस नामुराद बिल्ली पर और शैतान लड़के पर। मगर क्या करते? दाँत पीसकर रह गए। एक बार फिर भगवान का नाम लिया और आगे बढ़े। पर बाज़ार में पहुँचकर देखा कि हर आदमी, जो लेखक की तरफ देखता है, मुसकराता है। अब हम हैरान थे कि बात क्या है। सहसा हमने देखा कि हमने जल्दी और घबराहट में पजामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए हैं, और लोग इसी पर हँस रहे हैं। सिर मुँडाते ही ओले पड़े। हमने उस्ताद से माफ़ी माँगी और घर लौट आए अर्थात हमारा पहला दिन मुफ़्त में गया।

(ङ) हमारी देह पर कितनी ही पट्टियाँ बँधी थीं। हमें होश में आते देखकर श्रीमती जी ने कहा, ''क्यों? अब क्या हाल है? मैं कहती न थी, साइकिल चलाना न सीखो। उस समय तो किसी की सुनते न थे।''

हमने सोचा, लाओ, सारा इलज़ाम तिवारी पर ही लगा दें और आप साफ़ बच जाएँ। कहा, ''यह सब तिवारी जी की शरारत है।''

श्रीमती जी ने मुसकराकर जवाब दिया, ''यह चकमा उसको देना जो कुछ जानता न हो। उस ताँगे पर बच्चों को लेकर मैं ही तो घूमने निकली थी कि चलो सैर कर आएँगे और तुम्हें साइकिल चलाते भी देख आएँगे।''

5. (क) उस्ताद; (ख) पेशगी; (ग) खजाना; (घ) मजबूरी; (ङ) ख्याल; (च) बेईमानी
6. (क) पंडिताई; (ख) वृद्धावस्था; (ग) धीरज; (घ) चतुराई; (ङ) तीक्ष्णता; (च) कातरता; (छ) औचित्य; (ज) बड़प्पन; (झ) मूढ़ता; (ञ) विवशता; (ट) मलिनता; (ठ) प्रवीणता
7. (क) की, की; (ख) से, से; (ग) में, की; (घ) से, में, (ङ) पर, की

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 मेरे लड़के को सिखाएँ... पत्र

1. (क) अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे।
   (ख) पत्र में लिखा था कि हरेक की बात को धैयपूर्वक सुनें, फिर उसे सत्य की कसौटी पर कसें और केवल अच्छाई को ही ग्रहण करें।
   (ग) यह पत्र उन्होंने अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा था ताकि वे उनके बेटे को सभी अच्छी-अच्छी बातें सिखा सकें।
2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii
3. (क) न्यायप्रिय; (ख) हारना, जीत; (ग) मुसीबतों; (घ) गलत; (ङ) पत्र
4. (क) गलत; (ख) सही; (ग) सही; (घ) गलत (ङ) सही
5. (क) नहीं, सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते, और न ही सब सच बोलते हैं।
   (ख) लिकंन ने यह इसलिए लिखा ताकि अध्यापक उसे अपनी मुसीबतों को हँसकर टालना सिखाएँ। वह जल्दी ही यह सबक सीखे कि बदमाशों को आसानी से काबू में किया जा सकता है।
   (ग) लिकन चाहते थे कि अध्यापक उनके पुत्र को किताबों की मनमोहक दुनिया में अवश्य ले जाएँ। साथ-साथ उसे प्रकृति की सुंदरता, नीले आसमान में उड़ते आजाद पक्षी, सुनहरी धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ और पहाड़ के ढलानों पर खिलखिलाते जंगली फूलों की हँसी को भी निहारने दें। स्कूल में उसे सिखाएँ कि नकल करके पास होने से तो फेल होना बेहतर है।
   (घ) लेखक ने कहा कि हो सके तो उसे दुख में भी हँसने की सीख दें। उसे समझाएँ कि अगर रोना भी पड़े, तो उसमें कोई शर्म की बात नहीं है। वह आलोचकों को नजरअंदाज करे। और चाटुकारों से सावधान रहे।
   (ङ) पत्र के अंत में उनहेंने कहा है कि उसे हमेशा ऐसी सीख दें कि मानव-जाति पर उसकी असीम श्रद्धा बनी रहे।
6. (क) दूरदर्शी; (ख) अल्पज्ञ; (ग) मृदुभाषी; (घ) प्रशंसनीय; (ङ) सदाचारी; (च) सुलभ; (छ) वाचाल
7. (क) सच्चाई; (ख) कीमती; (ग) तीव्र; (घ) स्वच्छ; (ङ) धर्मनिष्ठ; (च) समाज सबंधी; (छ) बुरा विचार; (ज) पशु जैसा
8. (क) अलगू चौधरी एक न्यायप्रिय व्यक्ति था।
   (ख) आजकल बहुत-से लोग स्वार्थी ही हैं।
   (ग) नरेंद्र जैसा देशप्रेमी हमारे गाँव में दूसरा नहीं है।
   (घ) मैंने तुम्हारा विश्वास करके ही उसे रुपये उधार दिए थे।
   (ङ) राजन कभी भी दूसरों की चीजों पर ईमान खराब नहीं करता है।
   (च) मैं सभी धर्मों में श्रद्धा रखता हूँ।
9. (क) सदा; (ख) नेक; (ग) करारा; (घ) बलबूते; (ङ) बहुत कुछ

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 आखिर कितनी ज़मीन

1. (क) दोनों बहनों की बातचीत सुनकर दीना को लगा कि बात तो सही है। बचपन से धरती माँ की सेवा में जुटे रहे। कभी किसी चीज़ की परवाह नहीं की। बस मुश्किल तो यह है कि हमारे पास जमीन काफी नहीं।
   (ख) बार-बार बैल जमींदार की चरागाह में पहुँच जाता है और उसे जुर्माना भरना पड़ता था।
   (ग) परदेसी ने बताया कि दरिया सतलुज के पार जमीन मुफ्त तो है ही, साथ ही इतनी बढ़िया कि उस पर गेहूँ की पहली फसल जो हुई तो आदमी से ऊँची उसकी बालें गईं। फसल इतनी घनी कि दराँत के एक काट में ही पूला बन जाता था। जिनके पास खाने को दाने नहीं थे, वे अब खलिहानों और गाय-बैल वाले हो गए हैं।
   (घ) दीना अपने साथ एक आदमी को लेकर सौदागर के बताए स्थान की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसने खाने-पीने का सामान, उपहार और मिठाई खरीदी।
   (ङ) कोलों के सरदास ने दीना को ज़मीन खरीदने का एक दिन का एक हजार रुपये भाव बताया।
2. (क) iv; (ख) i; (ग) ii
3. (क) पड़ोसियों के मवेशी उसके खेतों में घुस जाते और फसलें चर लेते। काफी समय तक दीना सहता रहा। कई बार पड़ोसियों को समझाया पर कोई फ़र्क न पड़ा। उसके धीरज का बाँध टूट गया और उसने अदालत में अर्ज़ी दे दी।
   (ख) उसके पास चराई के लिए खुला मैदान था। उसने ढेर सारे मवेशी खरीद लिए। कुछ दिन तो घर, ज़मीन और मवेशियों से वह खुश रहा पर धीरे-धीरे उसे ज़मीन पहले की तरह कम लगने लगी।
   (ग) दीना रात भर बिस्तर में लेटा-लेटा जमीन के बारे में सोचता रहा। ''एक दिन में लगभग साठ किलोमीटर जमीन तो आसानी से चल लूँगा। आजकल दिन भी लंबे होते हैं। इस जमीन में से घटिया वाली तो बेच दूँगा या किराये पर उठा दूँगा। लेकिन उम्दा ज़मीन में खेती करूँगा। दो दर्जन बैल काफ़ी होंगे। दो-चार नौकर भी रखने होंगे। कुछ ज़मीन बटाई पर चढ़ा दूँगा। बस फिर क्या। दिन ही बदल जाएँगे।''
   (घ) दीना ने आँखें बंद कीं। लंबी साँस ली, फिर टेकड़ी की ओर दौड़ा पर अब भी धूप बाकी थी। टाँगों ने जवाब दे दिया। लंबा कदम बढ़ाकर उसने टोपी को छू दिया और मुँह के बल जा गिरा।

(ङ) स्वयं कीजिए।

4. (क) हम अपने सुखमय जीवन की कामना करते हैं।
(ख) रवि किसी की परवाह नहीं करता है।
(ग) इतना कठिन प्रश्न हल कर पाना संभव नहीं है।
(घ) मेहतन करने वाले के लिए कोई काम मुश्किल नहीं है।
(ङ) लंबी दौड़-धूप के बाद आखिर तुम्हें सफलता मिल ही गई।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 तीर्थयात्रा

1. (क) लाजवंती के कई पुत्र हुए।
(ख) लाजवंती के पुत्र बचपन में ही मर गए।
(ग) लाजवंती को अपने पुत्र हेमराज के बुखार के कारण चिंता थी।
(घ) लाजवंती के पहले पुत्र का नाम मदन था।
2. (क) iii; (ख) ii; (ग) iv
3. (क) हेमराज को मियादी बुखार हुआ था।
(ख) हेमराज की दशा देखकर लाजवंती के पैरों के नीचे से धरती खिसकती-सी मालूम होने लगी। वह व्याकुल हो गई।
(ग) हेमराज के बुखार के बारे में वैद्यजी ने बताया कि यह मियादी बुखार है और यह इक्कीसवें दिन अपनी मियाद पूरी करके उतरेगा।
(घ) लाजबंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर से मन्नत माँगी—''देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थयात्रा करूँगी।''
(ङ) वह दौड़ती हुई अपने घर गई और संदूक से दो सौ रुपये लाकर हरो के सामने ढेर कर दिए।
4. (क) धर्म, अहिंसा; (ख) प्रखर, प्रभात; (ग) अनुमान, अनुचर; (घ) उपवन, उपसर्ग; (ङ) अनर्थ, अनावश्यक
5. (क) बद, तमीज; (ख) अध, मरा; (ग) कम, बख्त; (घ) चिर, काल; (ङ) खुश, दिल; (च) पुन:, आगमन
6. (क) कल दिन निकलते ही मैं पढ़ने बैठ जाऊँगा।
प्रभा की दीन दशा देखकर वह बहुत दुखी हुआ।
(ख) माँ ने बालक को अपने आँचल में छिपा लिया।
सेठ के पास करोड़ों की अचल संपत्ति है।
(ग) पुलिस को देखकर चोर भाग गए।
हमें अपने कर्म पर भरोसा करना चाहिए, भाग्य पर नहीं।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 ठुकरा दो या प्यार करो

1. (क) कवयित्री ने स्वयं को पूजा और पुजापा कहा है।
(ख) स्वयं कीजिए।
(ग) भगवान केवल आस्था के भूखे हैं, भेंट के नहीं।
(घ) भगवान को प्रसन्न रखने के लिए भक्त को केवल अपने विचार व भाव निर्मल और द्वेष-रहित रखने चाहिए।
2. (क) i; (ख) ii; (ग) iii
3. (क) कवयित्री कहती है कि हे परमेश्वर मेरे पास पूजा की थाली, फल, फूल, मिष्टान्न आदि नहीं हैं, परंतु मेरे मन में पूर्ण समर्पण का भाव है। अत: मेरी नि:स्वार्थ पूजा स्वीकार करो। मैं जैसी भी हूँ आपकी भाँति बिना किसी कुविचार आपकी शरण में हूँ।
(ख) कवयित्री कहती है कि हे ईश्वर मैंने स्वयं का मन इतना शुद्ध व शीतल कर लिया है कि इसमें अब कोई दोष शेष नहीं है। मेरे मन में किसी के लिए वैर भाव भी नहीं है। अत: मैंने स्वयं को आपके सम्मुख समर्पित कर दिया है।
4. (क) उपासक मंदिर में तरह-तरह के फल-फूल चढ़ावा आदि ले जाते हैं।
(ख) कवयित्री के पास पूजा के लिए किसी भी तरह की सांसारिक वस्तु नहीं है।
(ग) कवयित्री प्रेममग्न हो मंदिर में अपना निष्पाप एवं पवित्र हृदय प्रभु को दिखाने और उनकी सेवा में स्वयं को अर्पित करने आई है।
(घ) कवयित्री ने प्रभु से स्वयं को स्वीकार करने अथवा ठुकराने के लिए कहा है।
(ङ) इस कविता की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं।
5. (क) पुजारी; (ख) पुष्प; (ग) अक्षर; (घ) आवाज
6. (क) संकट के समय हमें साहस से काम लेना चाहिए।
(ख) हमें सभी से प्रेम से बोलना चाहिए।
(ग) हमें बड़ो के चरण स्पर्श करने चाहिए।
(घ) दादी माँ के पास कई बहुमूल्य गहने हैं।
(ङ) बेचारी की सारी रकम बीमारी की भेंट चढ़ गई।
7. (क) स्त्रीलिंग; (ख) पुल्लिंग; (ग) स्त्रीलिंग; (घ) पुल्लिंग; (ङ) पुल्लिंग; (च) पुल्लिंग
8. (क) चतुर; (ख) गरीब
9. (क) का-संबंध कारक, को-कर्म कारक, में-अधिकरण कारक
(ख) में-अधिकरण कारक, इसको-कर्म कारक
7. (क) अल्पमूल्य; (ख) अमीरनी; (ग) कर्कशता; (घ) मंदबुद्धि; (ङ) द्वेष; (च) नि:स्वार्थ

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 सच्चा यज्ञ

1. (क) एक धनी सेठ थे— अत्यंत विनम्र और उदार। धर्मपरायण इतने कि कोई साधु-संत उनके द्वार से निराश न लौटता, भरपेट भोजन पाता। भंडार द्वार सबके लिए खुला था। जो हाथ पसारे, वही पाए।
(ख) 'सबै दिन होत न एक समान', अकस्मात् दिन बदले और सेठ की हालत पतली हो गई।
(ग) सेठ के यहाँ से आठ-दस कोस की दूरी पर कुंदनपुर नाम का एक नगर था।
2. (क) i; (ख) iii; (ग) i; (घ) ii; (ङ) iii
3. (क) धर्मपरायण; (ख) सेठ, एक यज्ञ; (ग) देह, कूदने; (घ) बस्ती; (ङ) विश्राम, रास्ता; (च) नि:स्वार्थ, महायज्ञ
4. धन्ना सेठ → दैवी शक्ति प्राप्त
पोटली → कुत्ता
दुर्बल → मोटी-मोटी रोटियाँ
सेठानी → दान और यज्ञ

5. (क) सेठानी ने सेठजी से; (ख) धन्ना सेठ ने सेठजी से; (ग) सेठजी ने धन्ना सेठ से; (घ) धन्ना सेठ की पत्नी ने सेठजी से

6. (क) उन दिनों एक प्रथा प्रचलित थी। यज्ञों के फल का क्रय-विक्रय हुआ करता था। छोटा-बड़ा जैसा यज्ञ होता, तदनुसार मूल्य मिल जाता।
   (ख) सुनकर सेठ पहले तो बहुत दु:खी हुए, पर बाद में अपनी तंगी का विचार कर एक यज्ञ बेचने के लिए तैयार हो गए।
   (ग) यह अफवाह थी कि कुंदनपु की सेठानी को कोई दैवी शक्ति प्राप्त है, जिससे व तीनों लोकों की बात जान लेती हैं।
   (घ) सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआँ देखकर सेठ ने विचार किया कि यहाँ थोड़ी देर रुककर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए।
   (ङ) एक कुत्ता पड़ा छटपटा रहा है। बेचारे का पेट कमर से लगा था। सेठ को रोटी खोलते देख वह बार-बार गरदन उठाता, पर दुर्बलता के कारण उसकी गरदन गिर-गिर जाती थी। सेठ ने अपनी रोटियाँ कुत्ते को खिलाकर उसकी सहायता की।
   (च) सेठानी ने समझाया— "आपने आज रास्ते में स्वयं न खाकर चारों रोटियाँ भूखे कुत्ते को खिला दीं, यह महायज्ञ नहीं तो और क्या है? कुछ पाने की इच्छा से धन-दौलत लुटाकर किया गया यज्ञ, सच्चा यज्ञ नहीं है। नि:स्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ-महायज्ञ है। क्या आप इसे बेचने के लिए तैयार हैं?"

7. (क) भारत में बहुत-सी धातुओं के भंडार पाए जाते हैं।
   (ख) आजकल रुपयों की तंगी चल रही है।
   (ग) बेचारा बूढ़ा खून से लथ-पथ सड़क पर तड़प रहा था।
   (घ) उसकी दीन दशा देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो गया।
   (ङ) रामू का बेटा बहुत ही योग्य लड़का है।
   (च) उस ओर एक सभ्य बस्ती थी।

8. (क) यहाँ; (ख) अभी; (ग) उतना, जितना; (घ) तेज

9. (क) वह दिन भर नहीं आई।
   (ख) राधा कुछ नहीं कह पायी।
   (ग) वह बहुत आगे चला गया।
   (घ) दादाजी प्रात: काल घूमने गए।

10. (क) सहयोग; (ख) आलसी; (ग) निर्धन; (घ) संकीर्णता; (ङ) सरल; (च) आकर्षण

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 बात अठन्नी की

1. (क) रसीला इंजीनियर बाबू जगतसिंह के यहाँ नौकर था। उसे दस रुपये वेतन मिलता था।
   (ख) उसने इंजीनियर साहब से वेतन बढ़ाने की बार-बार प्रार्थना की। क्योंकि इस वेतन में घरवालों का गुजारा नहीं चल पाता था।
   (ग) शेख साहब फलों के शौकीन थे, रमजान रसीला को फल देता। इंजीनियर साहब को मिठाई का शौक था, रसीला रमजान को मिठाई देता।
   (घ) जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन इंजीनियर बाबू के पड़ोस में रहते थे। उनके चौकीदार मियाँ रमजान और रसीला में बहुत मैत्री थी।

2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii; (घ) ii; (ङ) ii

3. (क) अमीर, संदेह; (ख) मजिस्ट्रेट, पड़ोस; (ग) ठहरने, कोठरी; (घ) समझ, रिश्वत; (ङ) अपराधी, कोठियों

4. (क) इंजीनियर साहब ने रसीला से; (ख) रमजान ने रसीला से; (ग) रसीला ने रमजान से; (घ) रसीला ने इंजीनियर साहब से; (ङ) दासी ने रमजान से

5.

जगतसिंह	चौकीदार
रसीला	आठ आने
शेख सलीमुद्दीन	शेख साहब
ऋण	इंजीनियर बाबू
रिश्वतखोर	कोठरी
अँधेरी	मजिस्ट्रेट
रमजान	नौकर

6. (क) रसीला के गाँव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के रहते थे। वह अपनी सारी तनख्वाह घर भेज देता था।
   (ख) अगर तुम्हें कोई ज्यादा दे तो अवश्य चले जाओ। मैं तनख्वाह न बढ़ाऊँगा।
   (ग) थोड़ी देर बाद उसने कुछ रुपये रसीला की हथेली पर रख दिए।
   (घ) रसीला ने सुना, इंजीनियर बाबू कह रहे हैं—"बस पाँच सौ। इतनी-सी रकम देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं।"
   (ङ) इंजीनियर साहब ने उसे आवाज लगाई।, "रसीला, दौड़कर पाँच रुपये की मिठाई ले आ।"
   (च) रसीला ने साढ़े चार रुपये की मिठाई खरीदी और रमजान को अठन्नी लौटाकर समझा कि कर्ज उतर गया।
   (छ) रसीला चाहता तो कह सकता था कि यह साजिश है। मैं नौकरी करना नहीं चाहता इसीलिए हलवाई से मिलकर मुझे फँसाया जा रहा है।
   (ज) शेख साहब ने रसीला को छह महीने की कैद की सजा सुनाई।

7.

तनख्वाह	(तनख़्वाह)	तन्ख्वाह
(चौकीदार)	चोकीदार	चौकिदार
इनजीनीयर	(इंजीनियर)	इंजिनियर
परिशरम	परीशरम	(परिश्रम)
(हलवाई)	हलावाई	हलवई

8. (क) मुझे तुम्हारी बात पर पूरा विश्वास है।
   (ख) गुरुजी की बात पर तनिक भी संदेह ठीक नहीं है।
   (ग) राम लाल हमारे पड़ोस में रहता है।
   (घ) मुझे किताबें पढ़ने का शौक है।
   (ङ) स्कूल की फीस पेशगी देनी पड़ती है।
   (च) मेरी हथेली में खुजली हो रही है।
   (छ) रवि ने प्रबल को तमाचा मार दिया।
   (ज) इस कोठरी में अँधेरा क्यों है?

9. (क) निवेदन, याचना; (ख) कसम, शपथ; (ग) रुग्ण, अस्वस्थ; (घ) निष्ठुर, दुष्ट; (ङ) अभियोग, अपकर्म

10. (क) सच; (ख) बुरा; (ग) अस्वस्थ; (घ) नकली; (ङ) ऋणदाता; (च) मान; (छ) अधर्म; (ज) कठिन; (झ) अविश्वास; (ज) शिष्य; (ट) विश्वास; (ठ) अन्याय

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 सात सहेलियाँ

1. (क) भारत के पूरब में एक ही क्षेत्र में सात प्रदेश हैं।
   (ख) हिमालय के पूर्वी छोर में स्थित प्रदेश अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड व त्रिपुरा हैं।
   (ग) हिमालय की शृंखला कश्मीर तक 1500 मील लंबी है।
2. (क) i; (ख) iii
3. | | |
   |---|---|
   | पहाड़ों में दूरी के कारण | लकड़ी के खंभों पर बनते हैं। |
   | अधिक वर्षा के कारण | पूरा प्रदेश खुशियाँ मनाता है। |
   | लकड़ी और बाँस | उनकी भाषा, पोशाक विशिष्ट हो जाती है। |
   | पहाड़ पर मकान | यहाँ के जीवन का मूल आधार है। |
   | बिहू त्योहार के अवसर पर | पहाड़ों पर वनों का विकास हो जाता है। |
4. (क) भारत के पूरब में एक ही क्षेत्र में सात प्रदेश हैं। इन प्रदेशों को अंग्रेजी में 'सेवन सिस्टर्स' कहा जाता है। हम इन्हें हिंदी में 'सात सहेलियाँ' कह सकते हैं।
   (ख) पूरब के प्रदेशों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी अपनी संस्कृति है। संस्कृति के मुख्य तत्त्व के रूप में हम संगीत और नृत्य को ले सकते हैं। भारत में दो तरह के नृत्य के रूप मिलते हैं। एक ओर शास्त्रीय नृत्य और संगीत है, जिसके पीछे वर्षों पुरानी विरासत है।
   (ग) चाय की खेती के लिए पहाड़ सबसे उत्तम हैं। उसे नियमित रूप से पानी चाहिए, लेकिन उसकी जड़ों में कभी पानी जमा नहीं होना चाहिए। इसलिए पहाड़ की ढलान में ही चाय के लिए सीढ़ियों की तरह चारों ओर क्यारियाँ बनाई जाती हैं।
5. (क) विशेष; (ख) बड़ी; (ग) ज्यादा; (घ) पुराना; (ङ) अनर्थ; (च) अनेक
6. (क) विशेषताएँ; (ख) संस्कृतियाँ; (ग) भाषाएँ; (घ) जनजातियाँ; (ङ) व्यवस्थाएँ; (च) शैलियाँ; (छ) संभावनाएँ; (झ) खुशियाँ; (ञ) उपलब्धियाँ
7. **वाक्य रचना**
   (क) जाने की आवश्यकता होती है।
   (ख) खेत में सिंचाई करने की जरूरत होती है।
   (ग) दर्द के कारण लिख पाना कठिन होता है।
   (घ) यहाँ गाड़ी चलाना मुश्किल है।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 शून्य का आविष्कार

1. (क) बड़ी-से-बड़ी संख्या इन दस चिह्नों से लिखी जा सकती है।
   (ख) हर अंक का मान स्थान के अनुसार निर्धारित होता है।
   (ग) ताम्रपत्रों पर शब्दों में और कभी-कभी अंकों में भी तिथि भी डाली जाती थी। ऐसे ही एक दानपत्र में हमें पहली बार इस नई पद्धति के अंक देखने को मिलते हैं।
   (घ) पहली बार आठवीं सदी के एक दानपत्र में शून्यवाली संख्या मिली है।
   (ङ) आचार्य पिंगल ने पिंगल छंद सूत्र नामक ग्रंथ की रचना की थी।
2. (क) i; (ख) iv; (ग) ii; (घ) ii
3. (क) दैवी; (ख) खुदवाए; (ग) जयवर्धन-द्वितीय; (घ) शून्य; (ङ) 1 से 10
4. (क) शून्य वाली स्थानमान अंक-पद्धति एक दिन का दैवी चमत्कार नहीं है। धीरे-धीरे इसके बारे में विचार पक्के होते हुए सारे देश में इसका प्रचार होने में शताब्दियाँ लगीं। इस नई अंक-पद्धति की खोज होने पर भी लगभग एक हजार साल तक हमारे देश में पुरानी अंक-पद्धति का व्यवहार होता रहा।
   (ख) पुराने जमाने में लेख खुदवाए जाते थे। राजा या धनी लोग दान देते थे। दान की बातें ताँबे के पत्रों पर लिख दी जाती थीं।
   (ग) ईसा की पहली शताब्दी से कुछ साहसी भारतीय जावा, सुमात्रा, कंबोडिया आदि देशों में जाकर बसने लग गए थे।
   (घ) पिंगल छंद सूत्र नाम का एक ग्रंथ है। ईसा से सौ दो सौ साल पहले आचार्य पिंगल ने इस ग्रंथ की रचना की थी। पद्य छंदों में लिखे जाते हैं। छंदों के लिए मात्रा आदि का हिसाब जानना पड़ता है। इस ग्रंथ में मात्राओं के इसी प्रकार के हिसाब सूत्रों में दिए गए हैं।
   (ङ) जैन ग्रंथ 'अनुयोगद्वार-सूत्र' में आई हुई एक बड़ी संख्या का उल्लेख हम पहले कर चुके हैं। इसी ग्रंथ में 'अंकस्थान' शब्द आया है, जो अंकों के स्थानमान अर्थवाला हो सकता है।
   (च) करीब नब्बे साल पहले पेशावर जिले के भक्षाली गाँव में एक किसान को भोजपत्र पर लिखी हुई गणित की एक पोथी मिली थी। अब यह भक्षाली-हस्तलिपि के नाम से प्रसिद्ध है। यह दसवीं सदी की शारदा लिपि में लिखी हुई है।
   (छ) आर्यभट्ट के समय (500 ई०) से गणित के सारे ग्रंथों में नई अंक-पद्धति का व्यवहार देखने को मिलता है, पर अंक नहीं हैं, इनमें अक्षरांक या शब्दांक हैं।
   (ज) हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि ईसा की पहली सदी तक हमारे देश में शून्य नई दाशमिक स्थानमान अंक-पद्धति का आविष्कार हो चुका था।
5. (क) परतंत्र; (ख) अनिश्चित; (ग) नई; (घ) अस्वीकार
6. (क) निः + आधारित; (ख) स्थान + ईय; (ग) जान + कारी; (घ) साहित्य + इक; (ङ) भारत + ईय; (च) दर्शन + इक
7. (क) संख्याएँ; (ख) सूत्रों; (ग) अंकों; (घ) अभिलेखों; (ङ) ग्रंथों; (च) चिह्नों; (छ) गाँवों; (झ) वस्तुओं
8. (क) गणितज्ञ; (ख) वैज्ञानिक; (ग) दार्शनिक; (घ) साहित्यिक; (ङ) हस्तलिपि
9. (क) बीमार; (ख) कृपा; (ग) हिंदू; (घ) गृह
10. **अ + अ = आ**
    (क) अक्षरांक = अक्ष + अंक; (ख) शब्दांक = शब्द + अंक; (ग) शब्दांश = शब्द + अंश; (घ) पृष्ठांक = पृष्ठ + अंक; (ङ) रेखांकन = रेखा + अंकन; (च) गुणांक = गुण + अंक
    अ + उ = आ
    (क) गुणोत्तर = गुण + उत्तर; (ख) सूर्योदय = सूर्य + उदय; (ग) पूर्वोत्तर = पूर्व + उत्तर; (घ) गणेशोत्स = गणेश + उत्सव; (ङ) वार्षिकोत्सव = वार्षिक + उत्सव; (च) लोकाक्ति = लोक + उक्ति
11. (क) वह मेरी बात का सही मतलब समझ गया।
    सरकार ने दंगाइयों पर अर्थ दंड लगाया है।
    (ख) पिता का पत्र पढ़कर पुत्र को प्रसन्नता हुई।
    तुलसी पत्र बहुत शुभकारी होते हैं।

(ग) नाटक के तीसरे अंक में नायिका बहुत सुंदर लगी।
रोते शिशु को माता ने अंक में ले लिया।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 परिंदे की फ़रियाद

1. (क) परिंदे को गुजरा हुआ जमाना याद आता है।
(ख) परिंदे को पिंजरे में कैद कर लिया गया है।
2. (क) ii; (ख) iii; (ग) iii; (घ) i
3. आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना
वह बाग की बहारें, वह सबका चहचहाना
आजादियाँ कहाँ वह अपने घोंसले की
अपनी खुशी से आना, अपनी खुशी से जाना
लगती है चोट दिल पे, आता है याद जिस दम
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुसकराना
4. (क) इन पंक्तियों में कवि स्वयं को एक ऐसा परिंदा कह रहा है जो अपनों से, अपने आश्रय-स्थल से दूर कैद में छटपटा रहा है।
(ख) इन पंक्तियों का आशय है कि वतन अर्थात् अपने आश्रय से दूर होने के कारण हृदय दुख से व्याकुल है।
5. (क) कैदी को गुजरा हुआ जमाना, बाग की बहारें (खुशियों के पल), गाना-गुनगुनाना और अपनी इच्छानुसार कहीं भी स्वच्छंद आना-जाना याद आ रहा है।
(ख) कैदी को इस बात का डर है उसकी रिहाई अर्थात स्वतंत्रता उसके हाथ में नहीं है। उसे इस बात का दुख है कि उसका दुख-दर्द न तो कोई सुनने वाला है और न ही कोई इसका निवारण करता है।
(ग) 'परिंदे की फरियाद' शीर्षक पूर्णतया सार्थक है क्योंकि इस कविता में पिंजरे के पक्षी का दुख व्यक्त किया गया है।
6. (क) मेरी गुड़िया बहुत प्यारी-प्यारी है।
(ख) यह मेरे मित्र का आशियाना है।
(ग) बदनसीब लडकी फैसला सुन कर रो पडी।
(घ) भारत एक आजाद देश है।
7. (क) बेज़ुबाँ; (ख) फ़रियाद; (ग) आज़ादी; (घ) क़फ़स
8. (क) ओस, नीहार; (ख) नसीब, तकदीर; (ग) आशियाना, गृह; (घ) बगीचा, बाग; (ङ) स्वतंत्रता, स्वच्छंदता; (च) दुख, चिंता
9. (क) खुशहाली; (ख) आजाद; (ग) बदनसीबी; (घ) रिहा; (ङ) प्यार; (च) अंधकार
10. (क) स्त्रीलिंग; (ख) पुल्लिंग; (ग) पुल्लिंग; (घ) पुल्लिंग; (ङ) स्त्रीलिंग
11. (क) संबंध कारक; (ख) करण कारक; (ग) अधिकरण कारक; (घ) करण कारक

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 जामुन का पेड़

1. (क) रात को जोर का झक्कड़ चला। सेक्रेटरियट के लॉन का पेड़ गिर पड़ा।
(ख) सुपरिटेंडेंट सोच में पड़ गया। "पता नहीं जिंदा है कि मर गया? मर गया होगा, जिसकी पीठ पर इतना भारी पेड़ गिरा वह कैसे बच सकता है?"
(ग) कवि के जीवन की फाइल पूर्ण हो चुकी थी कवि का हाथ ठंडा था, आँखों की पुतलियाँ निर्जीव और चीटियों की लंबी पाँत उसके मुँह में जा रही थी....। उसके जीवन की फाइल पूर्ण हो चुकी थी।
2. (क) i; (ख) iii; (ग) ii; (घ) ii
3. (क) मिनटों, इकट्ठी; (ख) बच्चे; (ग) हॉर्टिकल्चर, व्यंग्यपूर्ण; (घ) प्लास्टिक; (ङ) स्वास्थ्य
4. रात को → झक्कड़ चला
जामुन का पेड़ → गिरा
कवि → पेड़ के नीचे दबा
चारों ओर → भीड़ जमा हुई
प्लास्टिक → सर्जन
अर्जेंट → मार्क
हार्टिकल्चर → डिपार्टमेंट
5. (क) एक क्लर्क ने भीड़ से; (ख) माली ने तीसरे क्लर्क से; (ग) दबे हुआ आदमी ने भीड़ से; (घ) सेक्रेटरी ने सभी से
6. (क) माली दौड़कर चपरासी के पास गया, चपरासी दौड़कर क्लर्क के पास गया, क्लर्क दौड़कर सुपरिटेंडेंट के पास गया तो सभी लॉन में आ गए। मिनटों में गिरे हुए पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई।
(ख) "बेचारा जामुन का पेड़ कितना फलदार था।" पहला क्लर्क बोला।
(ग) "मैं इसके फल झोली भरकर ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुन कितनी खुशी से खाते थे।" तीसरा क्लर्क रुआँसा होकर बोला।
(घ) पेड़ के नीचे दबे आदमी का उपनाम ओस था। वह एक कवि था।
(ङ) हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट ने तीसरे दिन जवाब दिया— "आश्चर्य है, हम लोग पेड़ लगाओ स्कीम चला रहे हैं और हमारे देश के सरकारी अफसर पेड़ काटने का सुझाव दे रहे हैं, वह भी फलदार जामुन के पेड़ को। हमारा सरकारी विभाग वृक्ष काटने की इजाजत नहीं दे सकता।"
7. (क) निशा, रात्रि, रजनी; (ख) सुबह, प्रात:, भोर; (ग) मानव, मनुष्य, व्यक्ति; (घ) वृक्ष, तरु, पादप; (ङ) आशा, भरोसा, सहारा
8. (क) तुम मेरे पास बैठो।
(ख) शिक्षा के अभाव में व्यक्ति पशु है।
(ग) तुम राधा के स्कूल जाना।
(घ) मेरा घर बहुत दूर है।
(ङ) पेड़ पर एक बंदर है।
9. (क) तुमने बहुत अच्छा सुझाव दिया है।
(ख) मुझे उस बात पर ताज्जुब हुआ।
(ग) तुम अनाज का व्यापार कर लो।
(घ) कल मोदी ने अपना फैसला सुनाया।
(ङ) आजकल मेरे शहर का वातावरण ठीक नहीं है।
10. (क) झक्कड़ रात को जोर से चला।
(ख) माली ने सुझाव दिया।
(ग) चपरासी दौड़कर क्लर्क के पास गया।
(घ) मैं जिंदा हूँ।

11. (क) कार्यवाही; (ख) दस्तावेज; (ग) विभाग; (घ) बरामदा

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 ऐसे-ऐसे

1. (क) मोहन की उम्र लगभग आठ-नौ वर्ष है।
   (ख) मोहन तीसरी कक्षा में पढ़ता है।
   (ग) मोहन के पिता डॉक्टर को दस रुपये देते हैं।
2. (क) iii; (ख) ii; (ग) iii
3. (क) माँ ने स्वयं से; (ख) पिता ने माँ से; (ग) वैद्यजी ने पिता से; (घ) डॉक्टर ने माँ से; (ङ) मास्टर ने माँ से
4. स्वयं कीजिए।
5. (क) माँ मोहन के 'ऐसे-ऐसे' कहने पर समझती है कि यह कोई नई बीमारी है। अत: वह घबरा रही थी।
   (ख) स्वयं कीजिए।
   (ग) स्वयं कीजिए।
6. स्वयं कीजिए।
7. (क) कार्यालय; (ख) खुशी; (ग) श्वेत; (घ) वैद्य; (ङ) अधिक; (च) दुख, परेशानी; (छ) व्याधि; (ज) कटि; (झ) विद्यालय; (ञ) भय
8. (क) अच्छा; (ख) काला; (ग) जाना; (घ) मासूम; (ङ) नासमझ; (च) ठंडा; (छ) लेना; (ज) पुरानी; (झ) झूठ; (ञ) सवाल
9. (क) कल तक तो वह भला-चंगा था, आज अस्पताल में भर्ती है।
   (ख) जोकर को देखकर सबने अट्टहास लगाया।
   (ग) चूहों ने घर में धमा-चौकड़ी मचा रखी है।
   (घ) बिल्ली को देखकर गुंजन सहसा चीख पड़ी।
   (ङ) मदन की तकलीफ देखकर बड़ा दुख होता है।
   (च) दुकानदार ने मिर्च की पुड़िया मुफ्त में दे दी।
   (छ) कल वैद्य जी ने नब्ज देखकर बीमारी का पता लगाया था।
10. (क) बेचारा; (ख) डॉक्टर; (ग) बीमारी; (घ) उँगलियाँ; (ङ) तबीयत; (च) खुराक; (छ) वैद्य; (ज) अट्टहास
11. (क) iv; (ख) iv; (ग) i; (घ) iii

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 सेवा ही सौंदर्य है

1. (क) सेवा का अर्थ है—परोपकार।
   (ख) दान देने से स्वार्थ बुद्धि दूर होकर आत्मतत्त्व का विकास होता है।
   (ग) नहीं, सिर्फ पेट पालना ही जीवन का उद्देश्य नहीं है अपना पेट तो जानवर भी भर लेते हैं।
   (घ) मानव सेवा सबसे बड़ी सेवा है।
2. (क) iii; (ख) iii; (ग) ii; (घ) ii
3. (क) परोपकार; (ख) मानव-जीवन, उपयोग; (ग) पेट पालना, मानवता; (घ) ईश्वर-प्राप्ति
4. (क) उनका कहना है कि परोपकार ही जीवन है। अपना पेट तो पशु भी भर लेता है।
   (ख) परोपकार और परहित साधन का नाम मनुष्यत्व अर्थात मानवता है।
   (ग) रहीम ने कहा—'देने हारा और है, जो देता दिन-रैन। लोग भरम हम पै करें, या विधि नीचे नैन।।'
   (घ) मानव-जीवन का सच्चा उपयोग सेवा और परोपकार में है।
   (ङ) मानव-मात्र में जब तक परोपकार, सेवा, दया, दान जैसी भावनाएँ विद्यमान रहेंगी तब तक मनुष्य, राष्ट्र और विश्व का कलयाण होता रहेगा।
5. (क) दयानंद = दया + आनंद
   (ख) सौंदर्य = सुंदर + य
   (ग) मनुष्यत्व = मनुष्य + त्व
   (घ) अंत:करण = अंत: + करण
   (ङ) महानुभाव = महा + अनुभाव
6. (क) बेकार, अनुपयोगी; (ख) परहित, परमार्थ; (ग) ईश्वर, प्रभु; (घ) घमंड, गर्व; (ङ) भिक्षा, खैरात
7. (क) स्वार्थ; (ख) मरण; (ग) न्याय; (घ) नीचा; (ङ) दुखी; (च) झूठा; (छ) अयोग्यता; (ज) अपनत्व
8. (क) सेठ रमाशंकर से परोपकार की आशा करना बेकार है।
   (ख) यहाँ के मंदिरों का सौंदर्य विश्व प्रसिद्ध है।
   (ग) तुम्हें भगवान पर भरोसा रखना चाहिए।
   (घ) हमें अपनी शक्ति पर अभिमान नहीं करना चाहिए।
   (ङ) तुम व्यर्थ की बातें क्यों करते हो?
9. (क) मैं आज ही दिल्ली जाऊँगा।
   (ख) तुम क्या कर रहे हो?
   (ग) जैसा करोगे तैसा ही पाओगे।
   (घ) अपना काम स्वयं करो।
   (ङ) यह दुर्घटना कब घटी?
   (च) तुम्हें मेरे जैसी जीन्स बाजार में कहीं नहीं मिलेगी।
   (छ) तुम कौन हो?

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 कामचोर

1. (क) बड़ी देर वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए।
   (ख) रात का खाना बच्चों को नहीं मिलेगा।
   (ग) एक दिन फर्शी दरी पर बहुत-से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू किया। दो-चार ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधुर पिटाई शुरू कर दी।
   (घ) अम्मा घर छोड़ जाने की बात करने लगी।
2. (क) iii; (ख) i; (ग) ii; (घ) iii
3. (क) विवाद, नौकरों; (ख) युद्ध; (ग) धींगा मुश्ती; (घ) बेनकेल; (ङ) व्याकुल, ब्रेक
4. स्वयं कीजिए।
5. (क) सही; (ख) सही; (ग) सही; (घ) गलत; (ङ) सही

6. शाही → फरमान
तनख्वाह → उम्मीदवार
लश्टम → पश्टम
तरकारी → टोकरी

7. (क) अम्मा ने बच्चों से; (ख) अब्बा ने बच्चों से; (ग) अम्मा ने बच्चों से; (घ) अम्मा ने अब्बा से

8. (क) "यह भला काम करेंगे।" अम्मा ने निश्चय किया। "करेंगे कैसे नहीं! देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा। समझे।" यह लीजिए, बिलकुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

(ख) "बहुत-से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफ्त तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।"

अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया—माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डाल सकते हैं!

(ग) एक बड़ा-सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में कूद पड़ा और कत्थे-चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफेद दूध जैसी चादर पर छापे मारता हुआ निकल गया।

एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाक मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेजी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ी जो बैठी हुई हाथ-मुँह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियाँ बेनकेल का ऊँट बनीं चारों तरफ दौड़ रही थीं।

एक भी दड़बे में जाने को राजी न थी।

(घ) तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी-पिछाड़ी बाँध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूध दूह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बाँध दिए गए। पिछले दो पैर चाचाजी की चारपाई के पायों से बाँध, अगले दो पैरों को बाँधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी हो गई।

(ङ) अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया, "अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज को हाथ लगाया तो, रात का खाना बंद हो जाएगा।"

9. (क) जल, नीर, वारि; (ख) दिवस, वासर, वार; (ग) रात्रि, निशा, रजनी

10. (क) वाह! आज तो मजा आ गया।
(ख) छि:! कितनी बदबू है!
(ग) हाय! बेचारा गरीब मर गया।
(घ) वाह! मौसम तो बड़ा सुहाना है।
(ङ) धत्! बहुत बदतमीज बच्चा है।
(च) हाय! मार डाला रे!

11. स्वयं कीजिए।

12. (क) नवीन; (ख) अघटित; (ग) कामचोर; (घ) दैनिक; (ङ) साप्ताहिक

13. (क) अंत; (ख) संशय; (ग) अतीत; (घ) गदंगी; (ङ) दिन; (च) नि:संकोच

14. (क) मुझे दिन में सोने की आदत नहीं है।
(ख) जय और वीरू की दोस्ती एक मिसाल है।
(ग) आज ही मैंने नौकरों को तनख्वाह दी है।
(घ) तुमने नौकरों को बाहर क्यों भेज दिया?
(ङ) दादी जी अपनी चारपाई पर सोई हुई थीं।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-20 वीरांगना : महारानी लक्ष्मीबाई

1. (क) वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर, 1835 को काशी में हुआ।
(ख) उनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथीबाई था।
(ग) 7 मार्च, 1854 को झाँसी पर अंग्रेजों का अधिकार हुआ।

2. (क) ii; (ख) i; (ग) iii; (घ) iii

3. (क) सेनानायक, कृपा; (ख) आनंद, निधन; (ग) असहनीय, घबराई; (घ) ह्योरोज; (ङ) विजयोल्लास, विरूद्ध

4. लक्ष्मीबाई → वीरांगना
गंगाधर राव → झाँसी के राजा
मोरोपंत → पिता
भागीरथी → माता
प्रज्वलित → क्रांति की ज्वाला

5. (क) काशी; (ख) पिता; (ग) कृपा; (घ) माना; (ङ) तात्या टोपे

6. (क) रानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनुबाई था।
(ख) लक्ष्मीबाई का उपनाम मणिकर्णिका था।
(ग) मनुबाई का विवाह सन् 1850 में गंगाधर राव के साथ हुआ था। वे झाँसी के राजा थे।
(घ) 21 नवंबर को राजा गंगाधर राव चल बसे, तो सारी झाँसी शोक सागर में डूब गई थी।
(ङ) राजा गंगाधर ने अपने परिवार के बालक दामोदर राव को गोद लिया था। उसे अंग्रेजों ने उनका उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया था।
(च) अंग्रेजों की राज्य लिप्सा की नीति से उत्तरी भारत के नवाब और राजे-महाराजे असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी।
(छ) नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल, स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहब के वकील अजीमुल्ला, शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दनसिंह और तात्या टोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे।

7. (क) काला; (ख) ऐतिहासिक; (ग) पतली, मोटी; (घ) चार किलो; (ङ) काले

8. (क) सुंदर; (ख) रंग-बिरंगी; (ग) साप्ताहिक; (घ) पीला; (ङ) महा; (च) नई; (छ) पिछड़ा; (ज) ज्ञानी; (झ) आम; (ञ) अमीर

9. (क) असहनीय; (ख) विधवा; (ग) दत्तक; (घ) ऐतिहासिक

10. (क) पिता के शोक में पुत्र बेहोश हो गया।
मुझे घूमने का शौक नहीं है।

(ख) चोर उस ओर गया है।

मेरा और तुम्हारा नौकर गाँव में है।

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।

पाठ-21 योग्यता की पहचान

1. (क) नागार्जुन प्रख्यात रसायनशास्त्री थे।
   (ख) रसायनों के ज्ञाता को रसायनशास्त्री कहते हैं।
   (ग) औषधियाँ हमारे रोग दूर करने के काम आती हैं।
2. (क) i; (ख) ii; (ग) ii
3. (क) औषधियों; (ख) अवस्था, असमर्थ; (ग) चयन, सहायक; (घ) नागार्जुन; (ङ) नवयुवक, खामोश
4.

प्रख्यात	शर्त पर हैरान हुआ
औषधियों की	दूसरा नवयुवक
नवयुवक	बीमार आदमी पड़ा था
राजमार्ग पर	खोज
खामोश	रसायनशास्त्री

5. (क) नागार्जुन ने राजा से; (ख) राजा ने नागार्जुन से; (ग) पहले नवयुवक ने नागार्जुन से; (घ) नागार्जुन ने दोनों युवक से; (ङ) नागार्जुन ने दूसरे युवक से
6. (क) नागार्जुन अपने जमाने के प्रख्यात रसायनशास्त्री थे। उन्होंने अपनी चिकित्सकीय सूझबूझ से अनेक असाध्य रोगों की औषधियाँ तैयार कीं। वे निरंतर अपनी प्रयोगशाला में जुटे रहते और नित नई औषधियों की खोज करते।
   (ख) नागार्जुन ने एक बार राजा से कहा— ''राजन्! प्रयोगशाला का काम बहुत बढ़ चला है, अपनी अवस्था को देखते हुए मैं भी अधिक काम करने में असमर्थ हूँ। इसलिए मुझे अपने काम के लिए एक सहायक की आवश्यकता है।''
   (ग) कल मैं आपके पास दो कुशल और योग्य नवयुवकों को भेजूँगा। आप उनमें से किसी एक का चयन अपने सहायक के रूप में कर लीजिएगा।''
   (घ) दोनों युवक पदार्थ लेकर उठ खड़े हुए। तब नागार्जुन ने कहा—''तुम लोगों की मैं परसों प्रतीक्षा करूँगा।'' वे दोनों युवक जैसे ही जाने को हुए, नागार्जुन ने फिर कहा —''और सुनो, घर जाने के लिए तुम्हें पूरा राजमार्ग तय करना होगा।''
   दोनों नवयुवक उनकी अजीब शर्त सुनकर हैरत में पड़ गए और सोचने लगे कि आचार्य उन्हें राजमार्ग से होकर ही जाने को क्यों कह रहे हैं।
   (ङ) नागार्जुन ने पहले युवक से पूछा—''क्यों भाई! वह रसायन तैयार कर लिया?'' युवक ने तत्परता से प्रत्युत्तर दिया—''जी हाँ! मैंने उस पदार्थ की पहचान कर रसायन तैयार कर लिया है।''
   (च) युवक ने उत्तर दिया—''जी! मैं आपके आदेश के अनुसार राजमार्ग से होकर गुजर रहा था कि अचानक मैंने देखा कि एक पेड़ के नीचे एक वृद्ध बीमार व्यक्ति पड़ा दर्द से कराह रहा है और पानी माँग रहा है। कोई उसे पानी तक देने के लिए तैयार नहीं था। सब अपने-अपने रास्ते चले जा रहे थे। मुझसे उस वृद्ध की यह दशा देखी न गई और मैं उसे उठाकर अपने घर ले गया। वह अत्यधिक बीमार था। मेरा सारा समय उसकी चिकित्सा और सेवा-शुश्रूषा में लग गया। अब वह स्वास्थ्य लाभ कर रहा है। इसीलिए मैं आपके द्‌वारा दिए गए पदार्थ का रसायन तैयार न कर पाया। कृपया मुझे क्षमा करें।''
7. रोना पीना
   डरना देना
   जाना सूँघना
   शर्माना
8. (क) देता; (ख) सुलाती; (ग) उड़ाता; (घ) करवाता
9. (क) नागार्जुन; (ख) चरणामृत; (ग) समयाभाव; (घ) पराधीन; (ङ) सत्यार्थ; (च) भावार्थ
10. (क) वृद्धा; (ख) रानी; (ग) नवयुवती; (घ) आचार्या; (ङ) सहायिका
11. (क) रसायन + शास्त्री; (ख) राज + मार्ग; (ग) यथा + समय; (घ) सेवा + भाव

पाठ्येतर गतिविधि

स्वयं कीजिए।